READ AND RISE

PART-III

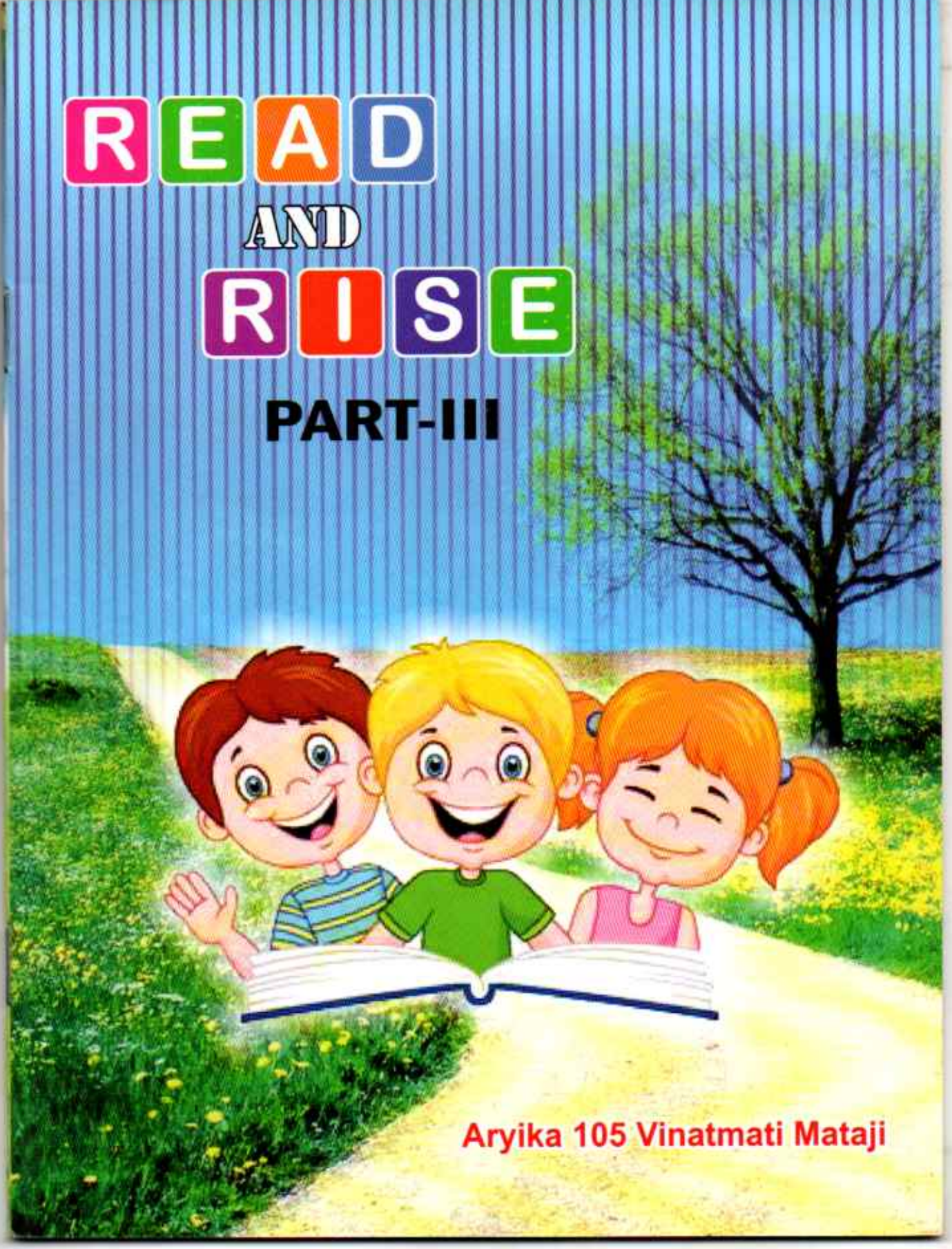

Aryika 105 Vinatmati Mataji

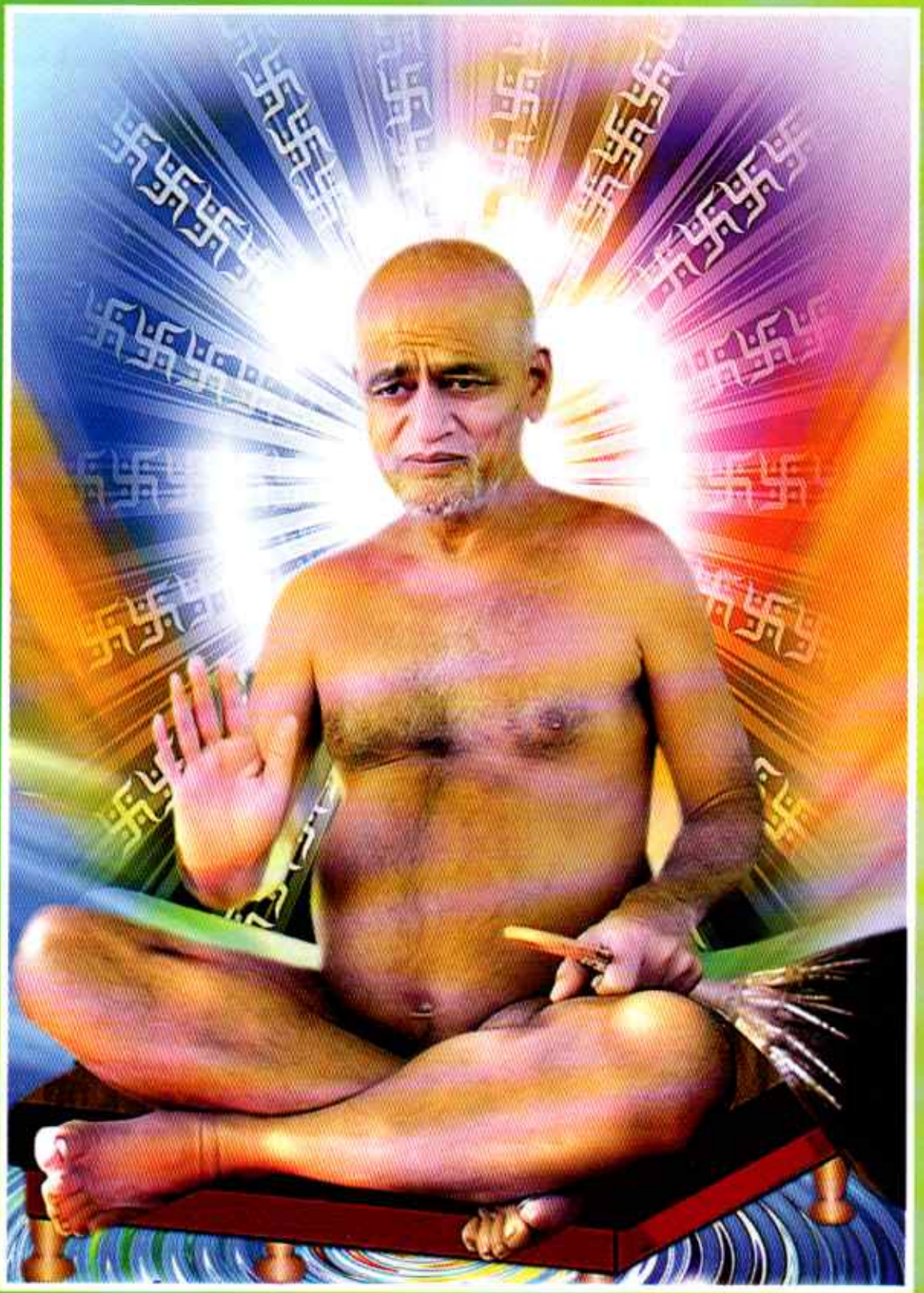

READ AND RISE

PART-III

Dedicated into Lotus hands of Param Poojya Teertha-Pravartaka
Samaadhi-Samraata Digambaracharya
108 Shree Vidyasagarji Maharaj

Aryika Shree Vinatmati Mataji

कृति : रीड एन्ड राइज (भाग-3)

आशीर्वाद : परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य गुरुवर 108 श्री विद्यासागरजी महाराज

सान्निध्य : परम पूज्य आर्यिका रत्न 105 श्री प्रशान्तमति माताजी ससंघ

कृतिकर्त्री : आर्यिका श्री विनतमति माताजी

संस्करण : प्रथम 2017, परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के स्वर्ण दीक्षा समारोह (50 वाँ वर्ष) के उपलक्ष्य में प्रकाशित।

आर्थिक सहयोग : श्री दिगम्बर जैन समाज, रतलाम (म.प्र.)

ब्र.समता दीदी, इन्दौर (म.प्र.)

उत्प्रेरक : श्रीमान् सुरेश जैन 'मारौरा', इन्दौर मो.: 8878102700

प्राप्ति स्थान

1. श्री दि. जैन पंचबालयति मंदिर
   विद्यासागर नगर, बॉम्बेहॉस्पिटल के पास ए.बी. रोड, इंदौर (म.प्र.)
   फोन : 0731-2571851, 4003056 मो.: 8989505108, 8717924109
2. बा.ब्र. मैना दीदी, श्राविका आश्रम, कंचनबाग, इन्दौर
3. ब्र. मोना जैन, अभाना जिला – दमोह (म.प्र.) मो. : 9981001130
4. ब्र. समता जैन, विशुद्ध-विनत छाया, 44, भाग्यश्री कालोनी, मंगल सिटी मॉल के पीछे, विजयनगर, इन्दौर (म.प्र.) मो. :8989845294,8818881434

प्रकाशक : श्री दिगंबर जैन युवक संघ

केंद्रीय कार्यालय : श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड, इन्दौर (म.प्र.)
फोन :- 2571851, मो.: 8989505108

मुद्रक : मोदी प्रिन्टर्स, 76-बी-1, पोलोग्राउंड इंडस्ट्रीयल एरिया, इन्दौर मो.: 98260-16543

न्यौछावर राशि : चालीस रुपये मात्र

*सर्वाधिकार सुरक्षित प्रकाशकाधीन

दो शब्द

संसार का प्रत्येक प्राणी अपना जीवन उन्नत व विकसित करने में अथक प्रयासरत् है लेकिन अपने-अपने अशुभ कर्मों से प्रवाहित जीवन को जैसा है, वैसा ही व्यतीत कर आयु कर्म का काल पूर्ण कर देता है क्योंकि उसे प्रभुवाणी का स्वरूप ज्ञात नहीं है जिससे उसका जीवन धर्म संस्कारों से वंचित हो विषय वासनाओं में उलझ जाता है। यह प्रयास देव-शास्त्र गुरु के दर्शन करने व ज्ञानाचरण करने पर ही निर्भर है। प्राय: बहुजन हिन्दी भाषा से अनभिज्ञ होने के कारण अपना अमूल्य जीवन सार्थक बनाने में सफल नहीं हो पाते। इसी प्रसंग को पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद से तथा पूज्य बड़ी माताजी श्री प्रशान्तमति माताजीकी सद्भावना से अन्तस्पटल पर अंकुरित कर इस लघु कृति को सृजित करने का साहस सभी आबाल-वृद्ध के जीवन को उन्नत, सुन्दर, विकासशील बनाने में प्रकाश-स्तम्भ बनें । इसी आशा के साथ आपके समक्ष प्रस्तुत है यह लघु कृति-Read and Rise (Part-III)

त्रुटियों के लिए सुझाव अपेक्षित हैं। सहयोगीजन साधुवाद के पात्र हैं।

आर्यिका विनतमति

विषय सूची (Index)

विषय (Subject) Page No.

प्रार्थना - Prayer- परमेश्वर - Lord of beings -

कविता - Poem - साधु की चर्या - Activity of Saint -

कविता - Poem - महान् गुरुवर - Super Preceptor

1. श्रावक के षडावश्यक - Six essentials of householder
2. पंच परमेष्ठी के मूलगुण - Primary virtues of Pancha parameshthee
3. ध्यान - Meditation

- गोम्मटेश स्तुति - Gommatesha stuti.
- तीर्थंकर नेमिनाथ - Teerthankara Neminaatha.
- आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज - Aachaarya Shree Shaantisaagarajee Mahaaraaj.
- अक्षय तृतीया - Akshaya Triteeyaa
- श्री गिरनार सिद्ध क्षेत्र - Shree Giranaara Siddhakshetra

कविता - Poem - महान् गुरुवर -Super Preceptor

प्रार्थना (Prayer)

परमेश्वर Lord of beings

Lord of beings, Lord of beings.
We praise lord of beings.
We laud God of beings.
Blissful soul, Gleeful Soul.
Graceful soul, Merciful Soul.
Earning, Earning, we esteem Lord of beings
Pleasing, Pleasing, We esteem Lord of beings
Lord of beings...
You seated on the toping
we sat at the falling.
When will seat on the toping.
Soon will sit at the toping.
We praise Lord of beings, We laud God of beings.
Lord of beings...
You are relief, give the aiding.
We are viles, grant the blissing
Greeting, greeting Lord of beings.
Hailing, Hailing, Lord of beings.
We praise Lord of beings, we laud God of beings.
Lord of beings...

Meaning = शब्दार्थ

Lord = लॉर्ड = ईश्वर, praise = प्रेज = स्तुति करते, laud = लॉड = गुणगान करते, blissful = ब्लिसफुल = सुखी, gleeful = ग्लीफुल = परम आनन्दित, graceful = ग्रेसफुल = श्री सम्पन्न, merciful = मर्सीफुल = कृपालु, gain = गेन = प्राप्त करते, earning = अर्निंग= उपयुक्त होकर, pleasing = प्लीजिंग = आनन्ददायक, esteem = एस्टीम = आदर करते, seated = सीटेड = विराजमान, toping = टॉपिंग = शिखर, sat = सेट = बैठे हुये, falling = फॉलिंग = नीचे, soon = सून = शीघ्र, relief = रिलीफ = सहारा, aiding = एडिंग = सहायता, vile = वाइल = पापात्मा, grant = ग्रांट = देना, greeting = ग्रीटिंग = अभिनंदन, hailing = हेलिंग = नमस्कार।

कविता (Poem)

साधु की चर्या (Activity of Saint)

How do the saint sleep ?
One side, One side, One side.
How do saint take the food ?
Standing, Standing, standing.
In which saint take the food ?
in the palm, in the palm, In the palm.
How do the saint moving ?
Below seeing, below seeing, below seeing.
How do the saint meditate ?
Closing eyes, Closing eyes, Closing eyes.
How many times does saint take the food ?
Once time, once time, once time.
What do saint bath with water ?
Never, Never, Never.
When do the saint pluck of hair ?
At the two, three, four, months.
Will you take the initiation of saint.
Yes, Yes, Yes, ha ! ha ! ha !

Meaning = शब्दार्थ

How = हाउ = कैसे, sleep = स्लीप = सोते हैं, standing = स्टेंडिंग = खड़े होकर, below = बिलो = नीचे, seeing = सीइंग = देखकर, meditate = मेडिटेट = ध्यान करते हैं, closing = क्लोजिंग = बन्द करके, bath = बाथ = स्नान, pluck = प्लक = लोंच करना

पहला पाठ (First Lesson)

श्रावक के षडावश्यक
The Six Essential Duties of Every Householder

आवश्यक – The essential duties -

श्रावक के द्वारा प्रतिदिन अवश्य करने योग्य क्रियायें आवश्यक कहलाती हैं।

Activities which are inevitable to be done by householder is called essential duties.

आवश्यक के छह भेद – There are six kinds of essential duties.

1. **देव पूजा** – To worship of the Omniscient Lords.
2. **गुरु उपास्ति** – Paying reverence to spiritual teachers.
3. **शास्त्र-स्वाध्याय** – The study of the scriptures and Jain religious volumes and thinking over its daily.
4. **संयम** – Restraint
5. **तप** – Penance
6. **दान** – Charity

1. देव पूजा – To worship of Omniscient Lords

सच्चे देव की श्रद्धा, भक्ति, समर्पण, विनय और आदर-सत्कार के साथ अष्ट द्रव्य से पूजन करना, उनके गुणों का स्मरण करना, पाठ करना तथा भक्ति भाव से नमस्कार करना, देव पूजा कहलाती है।

To worship or prayer of supreme souls by eight objects with right faith, devotion, dedication, modesty and respect, to remember the virtues of supreme souls, to recite of their virtues and bow-down to their idols with deep devotion. This is called the worship of Jinendradeva-

2. गुरु उपास्ति – Paying reverence to spiritual teachers.

आचार्य, उपाध्याय वा साधु सच्चे गुरु कहलाते हैं, इनकी पूजा करना तथा सेवा में सदा तत्पर रहना गुरु उपास्ति कहलाती हैं।

The chief preceptor, spiritual teacher and Jaina-Saints are true preceptors, performs worshiping and paying service to these, is called Guru-upasti.

Meaning = शब्दार्थ

Essential = एसेन्शियल = आवश्यक, duties = ड्यूटीज = कर्त्तव्य, every = एवरी = प्रत्येक, activities = एक्टिविटीज = क्रियायें, inevitable = इनएविटेबल = अनिवार्य, householder = हाउस होल्डर = श्रावक, deed = डीड = कार्य, worship = वर्शिप = पूजन करना, reverence = रेवरेन्स = सम्मान करना, nearness = नीअरनेस = निकटता, restraint = रेस्ट्रेन्ट = संयम, religious = रिलिजियस = धार्मिक, volumes = वॉल्यूम्स = ग्रन्थों, charity = चेरिटी = दान, dedication = डिडिकेशन = समर्पण, modesty = मोडेस्टी = विनय, remember = रिमेम्बर = स्मरण करना, recite = रिसाइट = पाठ करना,

3. शास्त्र स्वाध्याय - To study of the scriptures and Jain religion volumes daily.

आत्म कल्याण के लिये, मिथ्या मार्ग व संदेह दूर करने के लिये, पदार्थ का स्वरूप जानने तथा रत्नत्रय की प्राप्ति के लिये जिनेन्द्र भगवान के द्वारा कहे हुये आगम ग्रन्थों का पढ़ना, मनन करना या उपदेश देना, स्वाध्याय कहलाता है।

Reading, reflecting or exhorting of holy conons to preached by Jinendradeva for self beneficence, for removing false path and doubt, for showing nature of the matter-substance and for attaining the gemstrio, is called 'Swadhyay' (Studying scriptures).

स्वाध्याय के पाँच भेद - The five kinds of studying scripture.

1. वाचना - Studying - निर्दोष ग्रन्थ सही अक्षर और अर्थ सहित पढ़ना, वाचना स्वाध्याय है।

Studying, reading and explaining of religious canons without error alongwith correct meanings is Vachana Swadhyaya.

2. पृच्छना - Questioning - संशय को दूर करने के लिये अथवा जाने हुये पदार्थ को दृढ़ करने के लिये पूछना, पृच्छना स्वाध्याय है।

Raising question for moving doubt or consolidating true matter already known, is prichchhana Swadhyaya.

3. अनुप्रेक्षा - Reflecting - जाने हुये पदार्थ का बार-बार चिन्तन करना अनुप्रेक्षा स्वाध्याय है।

Pondering over the matter already known again and again is Anupreksha Swadhyaya.

4. आम्नाय - Revision - शुद्ध उच्चारणपूर्वक पाठ को पुनः पुनः दोहराना, आम्नाय स्वाध्याय है।

Repeating lesson / text again and again with correct pronunciation, is Amnaya Swadhyaya.

5. धर्मोपदेश - Exhorting - सभी जीवों को आत्म-कल्याण के लिये धर्म का उपदेश देना, धर्मोपदेश स्वाध्याय है।

To impart religious exhortation for own goodness to all living beings is Dharmopdesha Swadhyaya.

4. संयम - Restraint

पाँच इन्द्रियों व मन को वश में करना तथा षट्काय के जीवों की रक्षा करना संयम कहलाता है।

To control one's own senses and mind and to protect the living beings of all the six types, is called restraint.

5. तप - Penance -

कर्मों की निर्जरा करने के लिये, विषय कषायों का निग्रह करके बारह प्रकार के अन्तरंग व बहिरंग तपों को तपना, तप कहलाता है।

To practice twelve types of external and internal austerities for dissociating of karmas, restricting of sensual enjoyments and passions, is called penance.

अथवा, अपनी इच्छा का निरोध करना तप है।

Or, To control of one's own desires, is penance.

6. दान - Charity

स्व (अपने) और पर (दूसरों) के उपकार के लिए धनादि द्रव्य दूसरों को देना दान कहलाता है। अतः गरीब व दीनहीन जीवों को करुणा सहित तथा साधुओं को सम्मानपूर्वक दान देना चाहिये। दान देते समय किसी प्रकार की इच्छा न रखें, बल्कि खुशी से देना, दान कहलाता है।

Gives the one's wealth for mutual benefits of own and anothers. This is called charity (Donation). So give the donation to poor and needy persons should be with compassion and to the monks with reverence. A donor should not have any desire for material gains from the donations but should draw joy in giving. This is called charity.

Meaning = शब्दार्थ

Reflecting = रिफ्लेक्टिंग = मनन करना, exhorting = एग्जॉर्टिंग = उपदेश देना, canons = कनॉन्स = धार्मिक सिद्धांत, preached= प्रीच्ड = कहा हुआ, beneficence = बेनिफिसेन्स =कल्याण, removing = रिमूविंग = दूर करने, showing = शोइंग = जानने, explaining = एक्सप्लेनिंग = व्याख्या करना, error = ईरर = दोष, along with = एलॉङ्ग विद = साथ-साथ, questioning = क्वेश्चिनिंग = पूछना, raising = रेजिंग = जागृत करना, consolidating = कन्सॉलिडेटिंग = दृढ़ करने, pondering = पॉन्डरिंग = चिंतन करना, repeating = रिपीटिंग = दोहराना, impart = इम्पार्ट = प्रकट करना, goodness = गुडनेस = कल्याण , protect = प्रॉटेक्ट = रक्षा करना, austerities = एस्टरटीज = तप, dissociating = डिस्सोसिएटिंग = निर्जरा करने, restricting = रिस्ट्रिक्टिंग = निग्रह करके, compassion = कॅम्पेशन = करुणा, mutual = म्युचुअल = पारस्परिक, benefits = बेनिफिट्स = उपकार करने, needy = नीडि = दीनहीन, gains = गेन्स = प्राप्त करने, draw = ड्रॉ = लेना, joy = जॉय = खुशी।

प्रश्नावली Questionnarie

1. आवश्यक किसे कहते हैं ?
   What is called the essential duty ?
2. श्रावक के कितने आवश्यक कर्त्तव्य हैं ? कौन-कौन से हैं ?
   How many essential duties of householder are there ? Which are they ?
3. देव पूजा व गुरु उपास्ति किसे कहते हैं ?
   What is called the worship of omniscient lords and paying reverence to perceptions ?
4. स्वाध्याय व संयम की परिभाषा बताओ ?
   Described the definition of studying scriptures and Restraint ?
5. तप और दान क्या हैं ?
   What is the Penance and charity ?

दूसरा पाठ Second Lesson

पंच परमेष्ठी के मूलगुण
The Basic virtues of Panch-Parameshthee

पंच परमेष्ठी - The five highest status of enjoyer souls.

1. **अरिहंत** - The omniscient Lord.
2. **सिद्ध** - The liberated soul.
3. **आचार्य** - The chief preceptor.
4. **उपाध्याय** - The reader of holy scriptures.
5. **साधु** - The Saint.

1. अरिहंत परमेष्ठी - The Omniscient Lord.

जिन्होंने ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय इन चार घातिया कर्मों को अपनी आत्मा से दूर कर अनन्त दर्शन, अनन्तज्ञान, अनन्त सुख व अनन्त बल (शक्ति) को प्राप्त कर लिया है। जो संसार के समस्त पदार्थों को जानते हैं तथा जीवों को सुख शांति का उपदेश देते हैं। परम औदारिक शरीर सहित तथा जन्म-जरा आदि अठारह दोष रहित, शुद्ध आत्मा को अरिहंत परमेष्ठी कहते हैं।

Those who have removing the four types of destructive karmas, i.e. Knowledge obscuring, perception obscuring, deluding and obstructive karmas from their soul and acquired the infinite perception, infinite knowledge, infinite bliss, infinite power, who is knower of all substances of the world and preachs the bliss and peace for all living beings, who is endowed with supremely pure gross body and free from birth, oldage etc. eighteen faults, such pure soul is called Omniscient lord.

अरिहंत परमेष्ठी के 46 मूलगुण - There are forty six basic virtues of omniscient lord.

34 अतिशय - Thirty four extraordinary excellences.

8 प्रातिहार्य - Eight auspicious emblems.

4 अनन्त चतुष्टय - Four infinite exclusive excellences.

अतिशय – Extraordinary excellences - चमत्कारिक, अद्भुत तथा आकर्षक विशेष कार्यों को अतिशय कहते हैं अथवा सर्व साधारण प्राणियों में नहीं पायी जाने वाली अद्भुत या अनोखी बात को अतिशय कहते हैं।

Miraculous, amazing and attractive specifical acts, are called 'Atishaya', or extraordinary excellence is the speciality not found in common people.

34 अतिशय – Thirty four extraordinary excellences.

जन्म के 10 अतिशय – Ten extraordinary excellences of birth.

केवलज्ञान के 10 अतिशय – Ten extraordinary occurrences of perfect knowledge.

देवकृत 14 अतिशय – Fourteen extraordinary occurrences created by celestial beings.

जन्म के 10 अतिशय – Ten extraordinary excellences of birth.

1. सुन्दर रूप का होना – To be very handsome body.
2. सुगन्धित शरीर का होना – To be of very much scented body.
3. शरीर में कभी पसीना नहीं आना – Never to sweat in the body.
4. मलमूत्र रहित शरीर होना – body free from excrement and urine.
5. हित मित प्रिय वचन होना – Speaking of benevolent, sweet and favourite words.
6. अतुल्य बल का होना – To be passessed of unequalled power.
7. दूध के समान खून का सफेद होना – Having blood as white as milk.
8. शरीर में 1008 लक्षण होना – To be endowed with one thousand eight features.
9. समचतुरस्र संस्थान का होना – Having balanced formation of the body-organs.
10. वज्र वृषभ नाराच संहनन होना – Having adamantive osseous structure.

Meaning = शब्दार्थ

Basic virtues = बेसिक वरच्यूज = मूलगुण, highest status of enjoyer soul = हाइहेस्ट स्टेटस ऑफ एन्जॉयर सॉल = परमेष्ठी, removing = रिमूविंग = दूर करके, destructive = डिस्ट्रक्टिव = घातिया, knowledge obscuring = नॉलेज ऑब्सक्यूरिंग = ज्ञानावरण, perception obscuring = परसेप्शन ऑब्सक्यूरिंग = दर्शनावरण, deluding = डेल्यूडिंग = मोहनीय, obstructive = ऑब्स्ट्रेक्टिव = अंतराय, acquired = एक्वायर्ड = प्राप्त कर लिया, bliss = ब्लिस = सुख, power = पॉवर = बल, preachs = प्रीच्स = उपदेश देते, supremely pure gross = सुप्रीमली प्योर ग्रॉस = परम औदारिक, extraordinary excellences

= एक्स्ट्राऑर्डिनरी एक्सेलेन्सेज = अतिशय, auspicious emblems = ऑस्पिशस एम्ब्लेम्स = प्रातिहार्य, exclusive = एक्सक्लूसिव =अनन्य, miraculous = मिरक्यूलस = चमत्कारिक, amazing = एमेजिंग = अद्भुत, attractive = अट्रेक्टिव = आकर्षक, specifical = स्पेसिफिसल = विशेष, excrement = एक्सक्रीमेन्ट = मलमूत्र, benevolent = बेनिवॉलेन्ट = हितकारी, sweet = स्वीट = मधुर, favourite = फेवरिट = प्रिय, unequalled = अनइक्वलड = अतुल्य, thousand = थाउजेंड = हजार, features= फीचर्स = लक्षण, balanced = बेलेन्सड = सन्तुलित, formation = फॉर्मेशन = आकार, adamantive = एडमेन्टिव = वज्रमय, osseous = ऑसिअस = अस्थिमय, structure = स्ट्रक्चर = रचना।

केवल ज्ञान के 10 अतिशय-Ten extraordinary occurrences of perfect knowledge.

1. अरिहंत भगवान के चारों ओर सौ-सौ योजन में सुकाल होना - Existence of prosperity and plently on in the area of hundred yojanas in each of four directions.
2. पृथ्वी से ऊपर आकाश में गमन होना - Movements in the space above earth.
3. एक मुख होने पर भी चारों ओर चार मुख दिखना - Appearance of four faces-one in each direction.
4. अदया हिंसा का न होना - Absence of violence.
5. उपसर्ग नहीं होना - Non-happening of calamity.
6. कवलाहार नहीं लेना - Not taking morsel-food.
7. समस्त विद्याओं का स्वामीपना होना - mastery over all learnings.
8. नख और केशों का नहीं बढ़ना - Non-enlargement of nails and hair.
9. नेत्रों की पलकें नहीं झपकना - Eyes not winking.
10. शरीर की परछाई नहीं पड़ना - Non-existence of the reflexion of the body.

देवकृत 14 अतिशय - The fourteen extraordinary occurrences of created by celestial beings.

1. सब जीवों का हित करने वाली अर्धमागधी भाषा का होना - Having Ardhaamaagadhee Language of the Lord remains beneficial to all living beings.
2. जीवों में परस्पर मित्रता होना - Friendly relations in amongst all human beings.
3. दिशाओं का निर्मल होना - All directions being clean.
4. आकाश का निर्मल होना - The sky becomes clean.
5. छहों ऋतुओं के फलों के गुच्छे, पत्ते और फूलों से युक्त वृक्षों का सुशोभित होना - Existence of trees, adorned with tufts of fruits, leaves and flowers of all the six seasons.
6. पृथ्वी का रत्नमयी, सुन्दर दर्पण के समान निर्मल होना - The ground becomes crystal clear like charming mirror till one Yojana

7. विहार के समय भगवान के चरण रखने के स्थान में देवों द्वारा स्वर्ण कमलों की रचना करना - Creation of golden lotuses by gods at the place of treading of Teerthankara during the time of movement.

8. आकाश में जयध्वनि का होना - Becoming sound of acclamation in the sky.

9. मंद और सुगन्धित पवन चलना - Blowing the breeze and perfumed air.

10. सुगन्धित जल की वर्षा होना - Raining of fragant water.

11. पवनकुमार देवों द्वारा एक योजन तक पृथ्वी को धूलि, कंटक, तृण-कीट, रेत पाषाण रहित करना - Making the land free from dust, thorns, grass blades, insects, sand and stones upto one Yojana by Pavankumaras gods.

12. समस्त जीवों का आनन्दित होना - Supreme joy to all living beings.

13. भगवान के आगे धर्मचक्र चलना - Moving the reverential wheel ahead of omniscient Lords.

14. अष्ट मंगल द्रव्यों का साथ रहना - The eight auspicious substances accompany the Lord Jinendradeva.

प्रातिहार्य - Auspicious emblems.

जो प्रातिहार (द्वारपाल) की तरह तीर्थंकरों के साथ सदैव रहते हैं, विशेष विभूति को बतलाने वाली, शोभा की वस्तु प्रातिहार्य कहलाती हैं।

That which remains always before the Teerthankar like porter, are indicator of special majesty of Arihant Lord,such adorned articles are called auspicious emblems.

8 प्रातिहार्य - The eight auspicious emblems.

1. अशोक वृक्ष - Ashoka tree
2. सिंहासन - Throne
3. भामण्डल - Halo
4. तीन छत्र - Three Parasols.
5. चमर - Whisks
6. पुष्पवृष्टि - The showering of flowers.
7. देव दुन्दुभि - The musical instrument of kettledrum etc. of gods.
8. दिव्य ध्वनि - The revelation sound of omniscient in the form of omkar voice.

अनन्त चतुष्टय - Infinite exclusive excellences.

जो गुण अरहंत भगवान को चार घातियाँ कर्मों के क्षय होने से प्रकट होते हैं, वे अनन्त-चतुष्टय कहलाते हैं।

That which virtues are emerged from complete destroyed of four destructive karmas for omniscient Lords, those are called infinite four super excellences virtues.

चार अनन्त चतुष्टय - Four Infinite exclusive excellences.

1. अनन्त दर्शन - Infinite perception.
2. अनन्त ज्ञान - Infinite knowledge.
3. अनन्त सुख - Infinite bliss.
4. अनन्त वीर्य (बल) - Infinite power

Meaning = शब्दार्थ

Existence = एग्जिस्टेन्स = अस्तित्व, time of prosperity and plenty = टाइम ऑफ प्रॉस्पर्टी एण्ड प्लेंटी = सुकाल, area = एरिया = क्षेत्र, space = स्पेस = आकाश, above = एबव = से ऊपर, appearance = एपीअरेन्स = दिखाई देना, through = थ्रू = में से, absence = अबसेन्स = न होना, violence वॉयलेन्स = हिंसा, calamity = कैलेमिटी = उपसर्ग, morsels = मॉरसेल्स = ग्रास (कवल), learnigs = लर्निंग्स = विद्याओं, enlargement = इनलॉर्जमेन्ट = बढ़ना, nails = नेल्स = नख, winking = विंकिंग = झपकना, language = लेंग्वेज = भाषा, getting = गेटिंग = प्राप्त होना, tufts = टफ्ट्स = गुच्छें, charming = चार्मिंग = सुन्दर, leaves = लीव्ज = पत्ते, mirror = मिरर = दर्पण, creation = क्रिएशन = रचना, lotuses = लोट्सेज = कमलों, treading = ट्रेडिंग = चरण रखना, acclamation = एक्क्लेमेशन = जयजयकार, breeze = ब्रीज = शीतलमंद, blowing = ब्लोइंग= बहना, perfumed = परफ्यूम्ड = सुगन्धित, raining = रेनिंग = वर्षा होना, making = मेकिंग = बनाना, dust = डस्ट = धूल thorns = थॉर्नस = कंटक, grass blades = ग्रॉस ब्लेड्स= नुकीली घास, insects = इन्सेक्ट्स = कीट, sand = सेन्ड = रेत, reverential wheel = रेवरेन्शनल व्हील = धर्मचक्र, substances = सब्सटेन्सेज = द्रव्य, accompany = एकॉम्पनी = साथ-साथ, porter = पोर्टर = द्वारपाल, indicator = इन्डिकेटर = बतलाने वाली, majesty = मेजेस्टि = विभूति, adorned = एडोनर्ड = शोभा, articles = आर्टिकल्स = चीजें, showering = शॉवरिंग = वर्षा होना, musicial instrument = म्यूजिकल इन्सट्रुमेन्ट = वाद्य यंत्र, revelation = रेवेलेशन = दिव्य, emerged = इमर्जड = प्रकट हुआ ।

2. सिद्ध परमेष्ठी - Liberated Soul

जिन्होंने आठ कर्मों को अपनी आत्मा से दूर करके आठ गुणों को प्राप्त कर लिया है। जो शरीर से रहित हैं तथा लोक के अन्त में शाश्वत् विराजमान हैं। और सब कर्म दूर हो जाने से कभी भी लौटकर संसार में वापस नहीं आते, उन्हें सिद्ध परमेष्ठी कहते हैं।

Who has removed the eight karmas from their soul and is acquired the eight virtues. Who is free from body and is eternally ensconced at the end of upper

universe. Due to removing all Karmas, who will not return into the world, is called liberated soul.

सिद्धों के आठ मूल गुण - The eight basic virtues of liberated souls

1. अनन्त ज्ञान गुण - Infinite knowledge - ज्ञानावरण कर्म के अत्यंत क्षय से अनन्त ज्ञान गुण होता है।

The infinite knowledge is emerged due to complete destruction of knowledge obscuring karma.

2. अनन्त दर्शन गुण - Infinite Perception - दर्शनावरण कर्म के अत्यंत क्षय से अनन्त दर्शन गुण होता है।

The infinite perception is emerged due to complete destruction of perception obscuring karma.

3. अव्याबाध सुख गुण - Unperturbed bliss - वेदनीय कर्म के अत्यंत क्षय से अव्याबाध सुख गुण होता है।

The unperturbed bliss is emerged due to complete destruction of the feeling(pain-pleasure) producing obscuring karma.

4. क्षायिक सम्यक्त्व गुण - Annihilating right belief - मोहनीय कर्म के अत्यंत क्षय से क्षायिक सम्यक्त्व गुण होता है।

The anniihilating right belief and annihilating right conduct is emerged due to complete destruction of deluding karma.

5. अवगाहनत्व गुण - The attribute to give space for others - आयु कर्म के अत्यंत क्षय से अवगाहनत्व गुण होता है।

The attribute to give space to others is emerged from complete destruction of age karma.

6. सूक्ष्मत्व गुण - Extreme fineness virtue - नाम कर्म के अत्यंत क्षय से सूक्ष्मत्व गुण होता है।

The extreme fineness virtue is emerged due to complete destruction of name karma.

7. अगुरुलघुत्व गुण - Non-gravity levity virtue - गोत्र कर्म के अत्यंत क्षय से अगुरुलघुत्व गुण होता है।

The non-gravity levity virtue is emerged due to complete destruction of status determinating Karma.

8. अनन्त वीर्य गुण - Infinite power (energy) - अन्तराय कर्म के अत्यन्त क्षय से अनन्त वीर्य गुण होता है।

The infinite power is emerged due to complete destruction of obstructive karma.

Meaning = शब्दार्थ

Liberated soul = लिबरेटेड सॉल = सिद्ध परमेष्ठी, removed = रिमूव्ड = दूर किया, upper strata = अपर स्ट्रेट = ऊपरी भाग, not will return = नॉट विल रिटर्न = वापस नहीं आयेंगे, feeling producing obscuring = फीलिंग प्रोड्यूसिंग ऑब्सक्योरिंग = वेदनीय, unperturbed = अनपरटर्बड = अव्याबाध, annihilating = एनीहिलेटिंग = क्षायिक, extreme fineness = एक्सट्रीम फाइननेस = सूक्ष्मत्व, non-gravity levity = नॉन ग्रेविटी लेविटी = अगुरुलघुत्व, status determinating = स्टेट्स डिटरमाइनेटिंग = गोत्र कर्म, obstructive = ऑब्स्ट्रेक्टिव = अन्तराय।

3. आचार्य परमेष्ठी - The chief preceptor

जो पंचाचारों का स्वयं पालन करते हैं तथा अन्य मुनियों से पालन करवाते हैं, जो मुनियों के संघ के अधिपति होते हैं, उनको दीक्षा व प्रायश्चित आदि देते हैं, उन्हें आचार्य परमेष्ठी कहते हैं।

One who himself observes "Panchachar", (i.e.conduct of right faith, conduct of right knowledge, observation of right conduct, conduct of penance and conduct with spiritual strength) and makes other ascetics to observe, who is head / leader of the congregation and accord initiation to disciples and gives them expiation, is called chief preceptor.

आचार्य परमेष्ठी के छत्तीस मूलगुण
The thirty six basic virtues of the chief preceptor

12 तप - Twelve penances.
10 धर्म - Ten right virtues.
5 आचार - Five special right conducts.
6 आवश्यक - Six essential duties.
3 गुप्ति - Three self-controls.

बारह तप - Twelve penances

1. अनशन - Fasting.
2. अवमौदर्य - Less food taking than appetite.
3. वृत्ति परिसंख्यान - Resolution of certain vow of saint while going to take food.
4. रस परित्याग - Giving up of particular six kinds of taste.

5. विविक्त शय्यासन – Isolated place for sleeping or rest.
6. कायक्लेश – Physical mortification.
7. प्रायश्चित – Expiation (To eliminate negligence generated faults).
8. विनय – To pay reverence to spiritual personalities with full purity of mind, speech, body.
9. वैयावृत्त्य – Pious service of ten types of saints by another saints.
10. स्वाध्याय – Thorough spiritual study and contemplation.
11. व्युत्सर्ग – Renunciation of internal and external attachment.
12. ध्यान – Meditation.

दस धर्म – Ten religions (Virtues)

1. उत्तम क्षमा – Superme forbearance.
2. उत्तम मार्दव – Superme modesty.
3. उत्तम आर्जव – Superme simplicity.
4. उत्तम शौच – Superme greedlessness.
5. उत्तम सत्य – Superme truthfulness.
6. उत्तम संयम – Superme restraint.
7. उत्तम तप – Superme austerity.
8. उत्तम त्याग – Superme renouncement.
9. उत्तम आकिञ्चन्य – Superme possessionlessness.
10. उत्तम ब्रह्मचर्य – Superme celibacy.

पंचाचार – Five conducts.

1. दर्शनाचार – Observance of right perception.
2. ज्ञानाचार – Right practice of right knowledge.
3. चारित्राचार – Observance of right conduct.
4. तपाचार – Observance of penance.
5. वीर्याचार – Conduct with spiritual power.

छह आवश्यक – Six essential duties.

1. समता – Equanimity
2. वंदना – Praising of one Teerthankara.
3. स्तुति – Praising of twenty four Teerthankara.
4. प्रतिक्रमण – Expiatory recitals.
5. प्रत्याख्यान – Determination not to commit faults.
6. कायोत्सर्ग – A sanding posture of meditation detachment with body.

तीन गुप्ति - Three self-controls

1. मनोगुप्ति - Controlling the mind, restricting it from attachment and averson.
2. वचनगुप्ति - Controlling one's own words.
3. कायगुप्ति - Controlling one's own body.

Meaning = शब्दार्थ

Observes = ऑब्जर्वस = पालन करते हैं, congregation = कॉन्ग्रिगेशन = संघ, disciples = डिसाइपल्स = शिष्यों, expiation = एक्सपीएशन = प्रायश्चित्त, self-control = कन्ट्रोल = गुप्ति, fasting = फास्टिंग = उपवास, less = लेस = कम, appetite = एपिटाइट = भूख, resolution = रिसॉल्यूशन = दृढ संकल्पता, certain = सरटेन = निश्चित, while = व्हिल = जिस समय, giving up = गिविंग अप = त्याग, particular = परटीक्यूलर = विशेष, isolated = आइसॉलेटेड = निर्जन, विषम, physical = फिजीकल = शारीरिक, mortification = मोर्टिफिकेशन = तपस्या, personalities = परसनेलिटिज = व्यक्तित्त्वता, निजी, pious = पाइअस = धार्मिक, service = सर्विस = सेवा करना, thorough = थॉरों = सम्पूर्ण, renunciation = रिननसिएशन = त्याग, forbearance = फोरबियरेंस = क्षमा, modesty = मोडेस्टी = मार्दव, simplicity = सिम्पलीसिटी = आर्जव, greedlessness = ग्रीडलेसनेस = शौच, truthfulness = ट्रुथफुलनेस = सत्य, austerity = ऑस्टेरिटी = तप, equanimity = एक्युनिमिटी = समता, praising = प्रेजिंग = स्तुति, expiatory = एक्सपियेटरी = पश्चातापपूर्ण, recitals = रिसाइटल्स = वाचन करना।

4. उपाध्याय परमेष्ठी - The reader of holy scriptures.

जो चारित्र का पालन करते हुये संघ में सभी को पठन-पाठन कराते हैं तथा ग्यारह अंग और चौदह पूर्व के ज्ञाता होते हैं, वे उपाध्याय परमेष्ठी कहलाते हैं।

The ascetics who observing conduct, studies and teaches to all saints in the congregation and well-versed in eleven 'Angas' (Part of scriptural knowledge) and fourteen's Purvas' (particular part of scriptural knowledge) is called the reader of holy scriptures.

उपाध्याय परमेष्ठी के पच्चीस मूलगुण - Twenty five basic virtues of the reader of holy scriptures.

ग्यारह अंग - The eleven parts of scriptural knowledge.

चौदह पूर्व - The fourteen parts of scriptural knowledge.

ग्यारह अंग – The eleven parts of scriptural knowledge.

1. आचारांग – Aachaaraanga.
2. सूत्रकृतांग – Sootrakritaanga.
3. स्थानांग – Sthaanaanga.
4. समवायांग – Samavaayaanga.
5. व्याख्या प्रज्ञप्ति – Vyaakhyaaprajnapti.
6. ज्ञातृधर्मकथांग – Jnaatridharmakathaanga.
7. उपासकाध्ययनांग – Upaasakaadhyayanaanga.
8. अन्त: कृतदशांग – Antahkritadashaanga..
9. अनुत्तरोपपादिक दशांग – Anuttaropaadikadashaana
10. प्रश्न व्याकरणांग – Prashnavyaakarannaanga.
11. विपाक सूत्रांग – Vipaakasootraanga.

चौदह पूर्व – The fourteen particular parts of scriptural knowledge.

1. उत्पाद पूर्व – Utpaada poorva
2. आग्रायणीय पूर्व – Aagraayanneeya Poorva.
3. वीर्यानुवाद पूर्व – Veeryaanuvaada Poorva.
4. अस्ति नास्ति प्रवाद पूर्व – Astinaasti pravaada Poorva.
5. ज्ञानप्रवाद पूर्व – Jnaana pravaada Poorva.
6. सत्य प्रवाद पूर्व – Satya pravaada Poorva.
7. आत्मप्रवाद पूर्व – Aatma pravaada Poorva.
8. कर्म प्रवाद पूर्व – Karma pravaada Poorva.
9. प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व – Pratyakhyaana pravaada Poorva.
10. विद्यानुवाद पूर्व – Vidyaanuvaada Poorva.
11. कल्याणवाद पूर्व – Kalyaannavaada Poorva.
12. प्राणानुवाद पूर्व – Praannavaada Poorva.
13. क्रियाविशाल पूर्व – Kriyaavishaala Poorva.
14. लोकबिन्दुसार पूर्व – Lokabindusaara Poorva.

5. साधु परमेष्ठी - The saint.

जो सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक् चारित्र रूप रत्नत्रयमय मोक्षमार्ग की निरन्तर साधना करते हैं तथा समस्त आरम्भ और परिग्रह से रहित होते हैं। पूर्ण नग्न दिगम्बर मुद्रा के धारी होते हैं। जो ज्ञान, ध्यान तथा तप में लीन रहते हैं, उन्हें साधु परमेष्ठी कहते हैं।

The ascetics who continuously persevere to follow the path of salvation consisting of gems-trio of right belief, right knowledge and right conduct and keep themselves aloof from all types of endeavours consisting of violence and attachments (belongings) and assume full nudity, who remain absorbed in knowledge, meditation and penance, are called saints.

साधु परमेष्ठी के अट्ठाईस मूलगुण - The twenty eight basic virtues of saints.

1. पाँच महाव्रत - Five great vows.
2. पाँच समिति - Five carefulness, i.e. keeping vigilance in activities.
3. पाँच इन्द्रिय निरोध - Five sensual restraints.
4. छह आवश्यक - Six essential duties.
5. सात शेष गुण - Seven remainder virtues.

पाँच महाव्रत - Five great vows.

1. अहिंसा महाव्रत - The great vow of non-injury.
2. सत्य महाव्रत - The great vow of speaking the truth.
3. अचौर्य महाव्रत - The great vow of non-stealing.
4. ब्रह्मचर्य महाव्रत - The great vow of celibacy.
5. अपरिग्रह महाव्रत - The great vow of non-possessions.

पाँच समिति - The five carefulness.

1. ईर्या समिति - Carefulness in walking.
2. भाषा समिति - Carefulness in speech.(i.e.using polite language).

3. एषणा समिति - Carefulness in alms, food accepting for saints.

4. आदान निक्षेपण समिति - Carefulness in performing activities (putting and taking articles) by Jaina saints.

5. प्रतिष्ठापन समिति - Carefulness in excretion of faeces etc. body waste.

पाँच इन्द्रिय निरोध - Five sensual restraints - स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और श्रोत्र इन पाँच इन्द्रियों के मनोज्ञ-अमनोज्ञ विषयों में राग-द्वेष का परित्याग करना पंचेन्द्रिय निरोध है।

Relinquishing attachment and aversion in charming and disinteresting objects or sensual enjoyments of touch, taste, smell, eye and ear is called of five sensual restraints.

छह आवश्यक - The six essential duties.

1. समता - Equanimity.
2. वंदना - Eulogizing mainly any one out of twenty four Teerthankaras.
3. स्तुति - Praising of the attributes of twenty four Teerthankaras.
4. प्रतिक्रमण - Criticizing faults committed in forming vows.
5. प्रत्याख्यान - Expressing determination for not committing faults in future or renouncing food etc. for limited period.
6. कायोत्सर्ग - A standing posture of meditation, (detachment with body)

सात शेष गुण – Seven remained virtues.

1. स्नान का त्याग – Non-bathing.
2. भूमि पर शयन करना – To sleep on the earth.
3. वस्त्र का त्याग – Nakedness without any attachment and cloth.
4. केशलोंच करना – Uprooting of hair of head, bread and moustache.
5. दिन में एक बार आहार लेना – To take the food once time in a day.
6. दातौंन, मंजन नहीं करना – Non-cleaning of teeth before food.
7. खड़े होकर आहार लेना – The takes food in the standing posture without any support.

Meaning = शब्दार्थ

Continuously = कन्टिन्यूअसली = निरन्तर, persevere = परसिवीअर = साधना, follow = फॉलो = अनुकरण करते, aloof= एलूफ = दूर, endeavours = एनडेवर्स = उद्योग (धन्धों), belongings = बिलॉङ्गिंग्स = परिग्रह, assume = एस्स्यूम = धारण करना, nudity = न्यूडिटी = नग्नता, carefulness = केअरफुलनेस = समिति, Non-injury = नॉन इन्ज्योरी = अहिंसा, walking = वॉकिंग = चलने, using = यूजिंग = उपयोग करना, polite = पॉलाइट = शिष्ट , putting = पुटिंग = रखना, articles = आर्टिकल्स = वस्तु, relinquishing = रिलिंकक्विशिंग = त्याग करना, charming = चार्मिंग = सुन्दर , disinteresting = डिसइन्टरेस्टिंग = निष्प्रयोजनीय, objects = ऑब्जेक्ट्स = वस्तुयें, expressing = एक्सप्रेसिंग = व्यक्त करना, commiting = कम्मिटिंग = किये जाने, renouncing = रिनाउन्सिंग = त्याग करना, nakedness = नेक्डनेस = नग्नता, uprooting = अपरूटिंग = लोंच करना, bread = ब्रेड = दाढ़ी, moustache = मुसटश = मूंछें, non-cleaning = नॉन-क्लीनिंग = साफ नहीं करना, standing posture = स्टेन्डिंग पॉस्चर = खड़ी मुद्रा।

प्रश्नावली Questionnarie

1. अरिहंत परमेष्ठी किसे कहते हैं ?

   What is called the omniscient lord ?

2. अरिहंत परमेष्ठी के कितने मूलगुण होते हैं ? नाम बताओ।

   How many basic virtues of omniscient lord are there ? Tell their names.

3. सिद्ध परमेष्ठी किसे कहते हैं ? इनके मूलगुण कितने हैं ?

   What is called the liberated soul ? How many basic attributes of these ?

4. आचार्य परमेष्ठी का लक्षण बताओ ? इनके गुण कौन-कौन से हैं ?

   Define the chief preceptor ? which are of these virtues.

5. उपाध्याय व साधु परमेष्ठी की परिभाषा बताओ ?

   Described the definition of spiritual teacher and saint ?

तीसरा पाठ Third Lesson

ध्यान Meditation

ध्यान Meditation

किसी एक विषय में चित्त (मन) की वृत्ति को रोकना ध्यान कहलाता है।

The concentration of thought on one particular object is called Meditation.

ध्यान के चार भेद - The four kinds of Meditation.

1. आर्त्त ध्यान - The painful meditation.
2. रौद्र ध्यान - The cruel meditation.
3. धर्म ध्यान - The righteous meditation.
4. शुक्ल ध्यान - The supreme and absolute meditation.

जो कर्मों के क्षय करने की सामर्थ्य से युक्त हैं। वे दो धर्म और शुक्ल ध्यान प्रशस्त हैं। जो पापास्रव के कारण हैं, वे दो आर्त्त और रौद्र ध्यान अप्रशस्त हैं।

That which are capable of destroying the karmas, those later two meditations righteous and supreme and absolute virtuous are called auspicious. That which leads the inflow of sins, those former meditations (painful and cruel) are called inauspicious.

Meaning = शब्दार्थ

Meditation = मेडिटेशन = ध्यान, concentration = कॉनसेनट्रेशन = एकाग्रता, thought = थॉट = चित्त, one perticular = वन परटीक्यूलर = किसी एक, object = ऑब्जेक्ट = विषय, painful = पेनफुल = आर्त्त, cruel = क्रुऐल = रौद्र, righteous = राइटिअस = धर्म, supreme and absolute = सुप्रीम एन्ड आब्सॉल्यूट = शुक्ल, capable = केपेबल = सामर्थ्य से युक्त, destroying = डेस्ट्रॉयिंग = क्षय करने, later = लेटर = बाद के, auspicious = ऑस्पिशस = प्रशस्त, leads = लीड्स = नेतृत्व करना, inflow = इनफ्लो = आस्रव, inauspicious = इनऑस्पिशस = अप्रशस्त।

1. आर्त्तध्यान - The painful meditation.

जिससे दु:ख, पीड़ा उत्पन्न हो, ऐसे परिणामों वाले खोटे चिंतन को आर्त्त ध्यान कहते हैं।

To obtain the pain, trouble from which thoughts, such bad feelings is called the painful meditation.

आर्त्तध्यान के चार भेद - There are four kinds of painful meditation.

1. इष्ट वियोग आर्त्तध्यान - The separation from desired one painful meditation.

इष्ट पदार्थ के वियोग होने पर दुःखी होना तथा उसकी प्राप्ति की सतत चिंता करना इष्ट वियोग आर्त्तध्यान कहलाता है।

To sorrow on the separate of agreeable objects and thinking again and again for regaining them is called the separation from desired one painful meditation.

2. अनिष्ट संयोग आर्त्तध्यान - Undesirable Coincidental meeting painful meditation.

अमनोज्ञ पदार्थ के प्राप्त होने से निरन्तर दुःखी रहना, उसके वियोग के लिए सतत् चिन्तित होना, अनिष्ट संयोग आर्त्तध्यान कहलाता है।

To feel pain on the meeting of disagreeable objects and thinking again and again for their removal is called the undesirable coincidental meeting painful meditation.

3. पीड़ा चिंतन आर्त्तध्यान - The thinking of aching painful meditation.

वेदना के होने पर उसे दूर करने के लिए सतत् चिंता करना, पीड़ा चिंतन आर्त्तध्यान कहलाता है।

When there is pain caused by terrible diseases thinking again and again for their removal is called the thinking of aching painful meditation.

4. निदान बंध आर्त्तध्यान - To desire for enjoyment in the next birth, painful meditation.

आगामी भोगों की आकांक्षा से पीड़ित होकर, उनकी प्राप्ति के लिये चिंतन करना, निदान बंध आर्त्तध्यान है।

Being tormented by the desire for future pleasures, thinking again and again for their attainment, is called nidanbandha painful meditation.

2. रौद्र ध्यान - The cruel meditation.

क्रूर या दुष्ट परिणामों से होने वाला ध्यान, रौद्र ध्यान कहलाता है।

Meditation originated from cruel thought activities is called cruel meditation.

रौद्र ध्यान के चार भेद - The four kinds of cruel meditation.

1. हिंसानंद रौद्र ध्यान - Taking pleasure in violenceful activities with interest.

2. मृषानंद रौद्र ध्यान - Taking pleasure in telling and slandering etc.

3. चौर्यानंद रौद्र ध्यान - To feel pleasure in stealing activities.

4. परिग्रहानंद रौद्र ध्यान - To be joyful in collecting belonging and protecting of sensual pleasures.

Meaning = शब्दार्थ

Pain = पेन = दुःख, such = सच = ऐसे, separation = सेपरेशन = वियोग, desired = डिजायर्ड = इष्ट, sorrow = सॉरो = दुःख, object = ऑब्जेक्ट = वस्तु, coincidental = कॉन्सिडेन्टल = दुःखी होना, meeting = मीटिंग = मिलना, removal = रिमूवल = वियोग, aching = एकिंग = पीड़ा, enjoyment = एन्जॉयमेन्ट = भोग, pleasures = प्लीजियर्स = भोगों, observe = ऑब्जर्व = अवलोकन करना ।

धर्म ध्यान - The religious meditation.

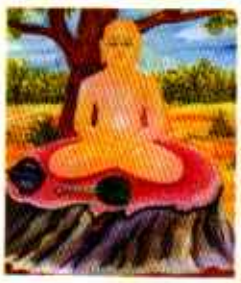

शुभ विचारों में मन का स्थिर होना धर्मध्यान है। अथवा सम्यग्दर्शन एवं सम्यक् चारित्र को धर्म कहते हैं और उस धर्म से युक्त जो चिंतन होता है उसे धर्मध्यान कहते हैं। अथवा मोह तथा क्षोभ से रहित जो आत्मा का परिणाम है, वह धर्म कहलाता है, उस धर्म से उत्पन्न जो ध्यान है, उसे धर्मध्यान कहते हैं।

Stability of mind in auspicious thoughts is virtuous meditation. Religion is called as right faith, right knowledge and right conduct and reflection combined with that religion is called virtuous meditation, or thought activity of the soul free from delusion and perturbation and agitation, is called religion and concentration generated from that religion, is called virtuous meditation.

धर्म ध्यान के चार भेद - The four kinds of religious meditation.

1. आज्ञा विचय धर्मध्यान - Respecting the teaching of Arihanta and scriptures -

जो इन्द्रियों से दिखाई नहीं देते हैं ऐसे बन्ध, मोक्ष आदि पदार्थों में जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा के अनुसार निश्चय कर चिन्तन करना, आज्ञा विचय धर्मध्यान है।

Having belief in such subtle entitles which are not visible by senses like karma-bond, salvation etc. and concentration on them taking then as granted on the authority of the Lord Jinendradeva is Aajna Vichaya Dharma Dhyana.

2. अपाय विचय धर्मध्यान - To reflect upon the worldly troubles -

संसार में भटकते प्राणी मिथ्यादर्शन मिथ्याज्ञान एवं मिथ्या चारित्र से कैसे दूर हो, इस प्रकार का निरन्तर चिंतन करना, अपाय विचय धर्मध्यान है।

How people wandering astray in the world, may get rid of false belief, false knowledge and false conduct, thinking again and again, is Apaya Vichaya Dharma Dhyana.

3. विपाक विचय धर्मध्यान - The contemplates on the worldly queerness due to fruition - कर्मों के उदय से सुख-दुःख होता है, पुण्य-पाप कर्मों का फल प्राप्त होता है, ऐसा चिंतन करना, विपाक विचयधर्मध्यान है।

Please-pain take place due to rise of karmas and get fruits of virtuous or sinful acts thinking its, is Vipak Vichaya Dharma Dhyana.

4. संस्थान विचय धर्मध्यान - The meditates on the about different dimensions of three worlds. तीन लोक के आकार, प्रमाण व भेद का चिंतन करना, संस्थान विचय धर्मध्यान है।

Thinking of the structure and measurement and kinds etc. of all the three divisions of the universe, is Sansthan Vichaya Dharma Dhyana

शुक्ल ध्यान - The supreme and absolute meditation - मन की अत्यंत निर्मलता होने पर जो एकाग्रता होती है उसे शुक्ल ध्यान कहते हैं।

That which fixed on the one point with highest purity of mind is called the pure meditation.

शुक्लध्यान के चार भेद - The four kinds of pure meditation.

1. पृथक्त्व वितर्क शुक्लध्यान - **Absorption in meditation of the self, but unconsciously allowing its different attributes to replace one, another** - पृथक-पृथक अर्थ, व्यंजन योग की सन्क्रान्ति और श्रुत जिसका आधार है, वह पृथकत्व वितर्क शुक्ल ध्यान है।

The base of which is different object of concentration, the verbal expression or word, shifting of vibratory activity of mind, speech and body and scripture is called Parthaktva Vitark pure meditation.

2. एकत्व वितर्क शुक्लध्यान - **Single Scriptural Concentration** - जो तीन योगों में से किसी एक योग के साथ होता है तथा अर्थ व्यञ्जन और योग की संक्रान्ति से रहित है, वह एकत्ववितर्क शुक्ल ध्यान है।

Which occurs with anyone of the three vibratory activities and without shifting of object, verbal expression and vibratory activity of body, is called Ekatva Vitark pure meditation.

3. सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति - **Sukshama Kriya Pratipati** - जब सयोग केवली भगवान का आयु कर्म अन्तर्मुहूर्त्त शेष रहता है, तब सब प्रकार के वचनयोग, मनोयोग और बादर काय योग को त्यागकर मात्र सूक्ष्म काययोग रहता है, तब सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति शुक्ल ध्यान होता है।

When the duration of age determining karma of an omniscient possessing physical presence (Sayoga Kevali) remains with in one Antarmuhurta (i.e. 48 minutes) then he gives up entirely the activities of the mind, speech organs and gross bodily activity and depends only on slight bodily activity, only then Sukshma Kriya Pratipati pure meditation comes into being.

4. व्युपरत क्रिया निवर्ती - No yoga or vibratory activity of mind, speech or body - विशेष रूप से उपरत अर्थात् दूर हो गई है, क्रिया (योग) जिसमें वह व्युपरत क्रिया है। व्युपरत क्रिया और अनिवृत्ति हो वह व्युपरत क्रिया निवृत्ति ध्यान है। अर्थात् योग रहित अवस्था में जो ध्यान होता है, वह व्युपरत क्रिया निवर्ती शुक्ल ध्यान है।

In which specially the vibratory activities have been completely alienated(dispelled) that is Vyuparata Kriya and Vyuparata Kriya Nivritti Dhyana is that which consists of both the Vyuparata Kriya and Anivritti (Abrtinence from attachment to external objet), i.e. concentration which takes place in the state free from vibrating activities of mind, speech and body is called Vyuparata Kriyaa Nivarteeni.

Meaning = शब्दार्थ

Stability = स्टेबिलिटि = स्थिरता, combined = कम्बाइन्ड = युक्त, delusion = डेल्यूजन = मोह, perturbation = परटर्वेशन = व्याकुलता, agitation = एगिटेशन = परेशानी, generated = जनरेटेड = उत्पन्न हुआ, rethinking = रिथिंकिंग = बार-बार चिंतन करना, principles = प्रिंसिपल्स = सिद्धांत, troubles = ट्रबल्स = दुखों, queerness = क्वीअरनेस = विचित्रता, dimensions = डायमेन्सन्स = संरचना, fixed = फिक्सड = स्थिर हुआ, different = डिफरेन्ट = भिन्न (पृथक-पृथक), object = ऑब्जेक्ट = पदार्थ (अर्थ), verbal = वर्बल = कहा हुआ, expressions = एक्सप्रेशन्स = शब्द रचना (व्यंजन), shifting = शिफ्टिंग = परिवर्तित होना, occurs = ऑक्कर्स = पाया जाना, duration = ड्यूरेशन = स्थिति, possessing = पॅजेसिंग = अधिकारी, physical = फिजिकल = शारीरिक, presence = प्रेजेन्स = उपस्थिति, entirely = एन्टायरली = सम्पूर्ण रूप से, organs = ऑर्गेन्स = अंग, gross = ग्रॉस = बादर, depends = डिपेन्ड्स = निर्भर होना, slight = स्लाइट = सूक्ष्म, comes = कम्स = होता है, takes place = टेक्स प्लेस = घटित होना, alineted = एलिनेटेड = दूर हो गई, abstinence = ऑबस्टिनेन्स = निवृत्त होना।

प्रश्नावली (Questionnarie)

1. ध्यान किसे कहते हैं ? नाम तथा भेद बताओ ?
   What is called the meditation ? Described its named and kinds.
2. आर्त्तध्यान व रौद्र ध्यान किसे कहते हैं ?
   What are called the painful meditation and cruel meditation.
3. आर्त्तध्यान व रौद्र ध्यान के कितने भेद हैं ?
   What are kinds of painful meditation and cruel meditation ?
4. धर्मध्यान व शुक्ल ध्यान क्या हैं इनके कितने भेद हैं ?
   What are the virtuous meditation and pure meditation ? what are kinds of these ?
5. इनकी परिभाषा तथा नाम बताओ।
   Define the definition and names of these ?

गोमटेश स्तुति Gommatesha-Stuti

विसट्ट कंदोट्ट दलाणुयारं, सुलोयणं चंद समाण तुण्डं
घोणाजियं चम्पय पुप्फसोहं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं ।।1 ।।

Visatta kandotta Dalaannuyaaram, suloyannam Chanda Samaanna Tunnddam.
Ghonnaajiyam Champaya Pupphasoham, Tam Gommatesam Pannamaami Nnichcham II1II

नीलकमल के दल सम जिनके, युगल सुलोचन विकसित हैं।
शशि-सम मनहर सुखकर जिनका, मुखमण्डल मृदु प्रमुदित है।।
चम्पक की छवि शोभा जिनकी, नम्र नासिका ने जीती।
गोमटेश जिन पाद-पद्म की, पराग नित मम मति पीती।।1 ।।

Neelakamala Ke Dala Sama Jinake, Yugala Sulochana Vikasita Hain.
Shashi-sama Manahara Sukhakara Jinakaa Mukhamannddala Mridu Pramudita Hai.
Champaka Kee Chhavi Shobhaa Jinakee, Namra Naasikaa Ne Jeetee.
Gomatesha Jina Paada-Padma Kee, Paraaga Nita Mama Mati Peetee II

अर्थ :- जिनके सुन्दर नेत्र नीलकमल की पांखुड़ी का अनुशरण करते हैं, अर्थात् उसके समान सुन्दर हैं। मुख चन्द्रमण्डल के समान सुशोभित है और जिनकी नासिका चम्पक पुष्प की शोभा को पराजित करती है, ऐसे उन गोम्मटेश बाहुबली को मैं नित्य प्रणाम करता हूँ।

Whose eye-lids are graceful like petal of blue-lotus. The face is fair like moonbright. The comeliness of nose defeats the elegant of bloomed bud of Magnolia (Champaka). always I nod to such that Lord Gommatesha Baahubalee.

Meaning = शब्दार्थ

Whose = हूज = जिनके, eye-lids = आई-लिड्स = पलकें नेत्र, graceful = ग्रेसफुल = सुन्दर, petal = पेटल = पांखुड़ी, blue-lotus = ब्लू-लोटस = नीलकमल, fair = फेयर = सुशोभित, moonbright = मून ब्राइट = चन्द्रमण्डल, comeliness = कमलीनेस = सुन्दरता, defeats = डिफीट्स = पराजित करती, elegant = एलीगेन्ट = शोभा, bloomed-bud = ब्लूमड-बड = पुष्प, magnolia = मॉगनोलिया = चम्पक, nod = नोड = प्रणाम, such = सच = ऐसे।

अच्छाय सच्छं जलकंत गण्डं, आबाहु दोलंत सुकण्ण पासं।
गइंद सुण्डुज्जल बाहुदण्डं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।2।।

Achchhaaya Sachchham Jalakanta Gannddam, Aabaahu Dolanta Sukannnna Paasam.
Gainda Sunnddujjala Baahudannddam, Tam Gammatesam Pannamaami Nnichcham.

गोल-गोल दो कपोल जिनके, उजल सलिल सम छवि धारे।
ऐरावत गज की सुंडा सम, बाहुदण्ड उज्ज्वल न्यारे।।
कन्धों पर आ कर्ण-पाश वे, नर्तन करते नन्दन हैं,
निरालम्ब वे नभ-सम शुचि, मम गोमटेश को वंदन है।।2।।

Gola Gola Do kapola Jinake Ujala Salila Sama Chhavi Dhaare
Airaavata Gaja Kee Sunddaa Sama Baahudanndda Ujjavala Nyaare.
Kandhon Para Aa Karnna-Paasha Ve Nartana Karate Nandana Hain.
Niraalamba Ve Nabha-sama Shuchi, Mama Gomatesha Ko Vandana Hai.

अर्थ :- जिनकी देह आकाश की भांति निर्मल है। जिनके कपोल जल के समान स्वच्छ हैं, कर्णपाश स्कन्धों तक दोलायित हैं, दोनों भुजायें ऐरावत हाथी की सूंड के समान सुन्दर लम्बी हैं, उन गोम्मटेश बाहुबली भगवान को मैं नित्य प्रणाम करता हूँ।

Whose prettiness of body is clear like sky, his cheeks are clean like water, the ear-ring is swinging unto shoulders, the bright and mighty both arms are fine, long like trunk of mammoth, always I nod to such that Lord Gommatesha- Baahubalee.

Meaning = शब्दार्थ

Prettiness = प्रिटिनेस = शोभा, clear = क्लीयर = निर्मल, sky = स्काई = आकाश, cheeks = चीक्स = कपोल, ear-ring = ईयर-रिंग = कर्णपाश, swinging = स्विंगिंग = दोलायित, unto = अनटू = तक, shoulders = शोल्डर्स = कंधों, bright = ब्राइट = उज्ज्वल, mighty = माइटी = शक्तिशाली, arms = आर्मस = भुजायें, fine = फाइन = सुन्दर, long = लॉङ्ग = लम्बी, trunk = ट्रंक = सूंड, mammoth = मेम्मॉथ = ऐरावत हाथी।

सुकण्ठ सोहा जिय दिव्व संखं हिमालयुद्दाम विसाल कंधं।
सुपेक्ख णिज्जायल सुट्ठु मज्झं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।3।।

Sukanttha Sohaa Jiya Divva Sankham, Himaalayuddaama Visaala Kandham.
Supekkha Nnijjaayala Suttthu Majjham, Tam Gommatesam Pannamaami Nnichcham II

दर्शनीय तव मध्यभाग है, गिरि-सम निश्चल अचल रहा।
दिव्यशंख भी आप कण्ठ से हार गया वह विफल रहा।।
उन्नत विस्तृत हिमगिरि सम है, स्कन्ध आपका विलस रहा।
गोमटेश-प्रभु तभी सदा मम, तुम पद में मन निवस रहा।।3।।

Darshaneeya Tava Madhyabhaaga Hai, Giri-sama Nishchala Achala Rahaa.
Divya Shankha Bhee Aapa Kanttha Se, Haara Gayaa Vaha Viphala Rahaa.

Unnata Vistrita Himagiri Sama Hai Skandha Aapakaa Vilasa Rahaa.
Gomatesha-Prabhu Tabhee Sadaa Mama, Tuma Pada Men Mana Nivasa Rahaa

अर्थ :- अपने अद्वितीय कंठ की शोभा से जिन्होंने अनुपम शंख की सुषमा को जीत लिया है, जिसका वक्षस्थल हिमालय की भांति उन्नत और उदार है, जिनका सुन्दर मध्यभाग कटिप्रदेश सुदृढ़ और प्रेक्षणीय अवलोकनीय है, ऐसे उन गोम्मटेश बाहुबली भगवान को मैं नित्य प्रणाम करता हूँ।

Who have surpassed the prettiness of divine conch from spelendour of own unique neck, whose throax is lofty and wide like Himaalaya mountain, his fine waist is immovable and able to be seen, always I nod to such that Lord Gommatesha-Baahubalee.

Meaning = शब्दार्थ

Surpassed = सरपास्ड = जीत लिया, prettiness = प्रिटिनेस = सुषमा, divine = डिवाइन = अनुपम, conch = कॉच = शंख, splendour = स्प्लेण्डर = शोभा, own = ओन = अपने, unique = यूनीक = अद्वितीय, neck = नेक = कंठ, thorax = थोरेक्स = वक्षस्थल, lofty = लोफ्टी = उन्नत, wide = वाइड = उदार, mountain = माउन्टेन = पर्वत, waist = वेस्ट = कटिप्रदेश, immovable = इम्मूवेबल = सुदृढ़, able to be seen = एबल टू बी सीन = प्रेक्षणीय।

विंज्झायलग्गे पविभासमाणं, सिहामणि सव्व सुचेदियाणं।
तिलोय संतोसय पुण्णचंदं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।4।।

Vinjjhaayalagge Pavibhaasamaannam, Sihaamanni Savva, Suchediyaannam.
Tiloya Santosaya Punnnnachandam Tam Gommantesham Pannamaami Nnichcham ll4ll

विंध्याचल पर चढ़कर खरतर, तप में तत्पर हो बसते।
सकल विश्व के मुमुक्षु जन के, शिखामणी तुम हो लसते।।
त्रिभुवन के सब भव्य-कुमुद ये, खिलते तुम पूरण शशि हो।
गोमटेश प्रभु नमन तुम्हें हो, सदा चाह बस मन वशि हो।।

Vindhyaachala Para Chaddhakara Kharatara Tapa Men Tatpara Ho Basate.
Sakala Vishva Ke Mumukshu jana Ke, Shikhaamannee Tuma Ho Lasate.
Tribhuvana Ke Saba Bhavya Kumuda Ye, Khilate Tuma Pooranna Shashi Ho.
Gomatesha Prabhu Namana Tumhen Ho, Sadaa Chaaha Basa Mana Vashi Ho

अर्थ :- विंध्यागिरि के अग्रभाग में जो अनुपम कान्ति से दमक रहे हैं, विंध्याचल पर्वत पर जो तपस्या में लीन हैं, सभी सुन्दर चैत्यों (प्रतिमाओं) के शिखामणि हैं, तीन लोक के जीवों को आनन्द प्रदान करने में जो पूर्ण चन्द्रमा के समान हैं, ऐसे उन गोम्मटेश बाहुबली भगवान को मैं नित्य प्रणाम करता हूँ।

Who is glistening from incomparable brightness on the summit of Vindhyagiri who is rapt in hard penance on the peak of Vindha hill, who is jewel of crown of all fine idols, who is giver of pleasure like moon for all living beings of three worlds. Always I nod such that Lord gommatesha Baahubalee.

Meaning = शब्दार्थ

Glistening = ग्लिसनिंग = दमक रहे, summit = सम्मिट = अग्रभाग शिखा, incomparable = इनकम्परेबल = अनुपम, brightness = ब्राइटनेस = कान्ति, rapt = रेप्ट = लीन है, hard =हार्ड = कठोर, peak = पीक = शिखर, jewel of crown = ज्वेल ऑफ क्राउन = शिखामणि।

लया समक्कंत महासरीरं, भव्वावलीलद्ध सुकप्परुक्खं।।
देविंद विंदच्चिय पायपोम्मं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।

Layaa Samakkanta Mahaasareeram, Bhavvaavaleeladdha Sukapparukkham.
Devinda Vindachchiya Paayapommam, Tam Gommatesam Pannamaami Nnichcham॥5॥

मृदुतम बेल लताएँ लिपटीं, पग से उर तक तुम तन में।
कल्पवृक्ष हो, अनल्प फल दो, भविजन को तुम त्रिभुवन में।।
तुम पद-पंकज पर अलि बन, सुरपति गण करता गुन-गुन है।
गोमटेश प्रभु के प्रति प्रतिपल, वंदन अर्पित तन-मन है।।5।।

Mridutama Bela Lataaen Lipateen, Paga Se Ura Taka Tuma Tana Men.
Kalpavriksha Ho Analpa Phala Do, Bhavijana Ko Tuma Tribhuvana Men.
Tuma Padapankaja Para Ali Bana, Surapati Ganna Karataa Guna Guna Hai.
Gomatesha Prabhu Ke Prati Pratipala Vandana Arpita Tana Mana Hai ॥

अर्थ :- जिनके विशाल शरीर से सुगन्धित लताएँ लिपटी हुई हैं। भव्य जीवों के लिए जो कल्पवृक्ष के समान फल प्रदाता हैं। देवेन्द्र समूह जिनके चरण-कमलों की अर्चना-पूजा करते हैं। ऐसे उन गोम्मटेश बाहुबली भगवान को मैं नित्य प्रणाम करता हूँ।

Whose colossal body is clasped with fragrant creepers. Who is fruit giver alike the wish fulfilling tree for potential souls. The aggregate of chief gods are adored to those lotus-feet, always I nod such that Lord Gommatesha-Baahubalee Bhagavaana.

Meaning = शब्दार्थ

Colossal = कॉलोसेल = विशाल, clasped = क्लेस्पड = लिपटीं हुई, fragant = फ्रेगेन्ट = सुगन्धित, creepers = क्रीप्र्स = लताओं, alike = एलाइक = के समान, wish fulfilling tree = विश फुलफिलिंग ट्री = कल्पवृक्ष, potential souls = पोटेन्शल सॉल्स = भव्य जीवों, aggregate = एग्रेगेट = समूह, adored = एडोर्ड = पूजा करते।

दियंबरो जो ण च भीइ-जुत्तो, ण चांबरे सत्तमणो विसुद्धो।
सप्पादि जंतुप्फुसदो ण कंपो, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।6।।

Diyambaro Jo Nna Cha Bheei Jutto Nna Chaambare Sattamanno Visuddho.
Sappaadi Jantupphusado Nna Kampo, Tam Gommatesam Pannaamaami Nnichcham ॥

अम्बर तज, अम्बर तल थित हो, दिग अम्बर नहिं भीत रहे।
अम्बर आदिक विषयन से अति, विरत रहे भव-भीत रहे।।
सर्पादिक से घिरे हुए पर, अकम्प निश्चल-शैल रहे।
गोमटेश स्वीकार नमन हो, धुलता मन का मैल रहे।।6।।

Ambara Taja Ambara Tala Thita Ho. Diga Ambara Nahin Bheeta Rahe.
Ambara Aadika Vishyana Se Ati, Virata Rahe Bhava-Bheeta Rahe.
Sarpaadika Se Ghire Hue Para, Akampa Nishchala Shaila Rahe.
Gomatesha Sveekaara Namana Ho, Dhulataa Mana Kaa Maila Rahe II

अर्थ :- जो दिगम्बर श्रमण हैं। सप्त भय से रहित हैं, वस्त्र-वल्कलादि पर आसक्त मन वाले नहीं है क्योंकि विशुद्ध मन है। विषधर-नागराजादि जन्तुओं से दुरावृत्त होने पर भी जो अकम्प-अविचल हैं। ऐसे उन गोम्मटेश बाहुबली भगवान को मैं नित्य प्रणाम करता हूँ।

Who is nude-monk, is free from seven fears; Who is disinterested on the raiment and bark etc. because your mind is pure. The adders etc. poisonous creatures are wickedly surrounded for his body, even then who is unshaken and unmoved. Always I nod such that Lord gommatesha Baahubalee.

Meaning = शब्दार्थ

Nude-monk = नड-मंक = दिगम्बर, fear = फिअर = भय, disinterested = डिस्इन्टरेस्टेड = आसक्त नहीं है, raiment = रेमेन्ट = वस्त्र, because = बिकॉज = क्योंकि, adders = ऍडर्स = विषधर, poisonous = पॉयजन्स = विषैले, creatures = क्रीचर्स = जीव जन्तुओं, wickedly surrounded = विक्डली सराउन्डेड = दुरावृत्त हुये, unshaken = अनशेकन = अकम्प, even then = ईवन देन = तो भी, unmoved = अनमूव्ड = अविचल।

आसां ण जो पोक्खदि सच्छदिट्ठि, सोक्खे ण वंछ हयदोस मूलं।
विरायभावं भरहे विसल्लं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।7।।

Aasaam Nna Jo Pokkhadi Sachchhaditttthi, Sokkhe Nna Vanchhaa Hayadosa Moolam.
Viraaya Bhaavam Bharahe Visallam, Tam Gommatesam Pannamaami Nnichcham. II

आशा तुम को छू नहिं सकती, समदर्शन के शासक हो।
जग के विषयन में वांछा नहिं, दोषमूल के नाशक हो।।
भरत-भ्रात में शल्य नहीं अब, विगत-राग हो रोष जला।
गोमटेश तुम में मम इस विध, सतत् राग हो होत चला।।7।।

Aashaa Tuma Ko Chhoo Nahin Sakatee, Samadarshana Ke Shaasaka Ho.
Jaga Ke Vishayana Men Vaanchhaa Nahin, Doshamoola Ke Naashaka Ho.
Bharata-Bhraata Men Shalya Naheen Aba, Vigata Raaga Ho Rosha Jalaa.
Gomatesha Tuma Men Mama Isa Vidha, Satata Raaga Ho Hota Chalaa.

अर्थ :- आप आशा तृष्णा को पुष्ट करने वाले नहीं हैं, क्योंकि आप समदृष्टि के शासक हैं। स्व दोषों को समूल नष्ट करने वाले हों। अतः सांसारिक सुखों में वांछा नहीं हैं। अन्दर विरागभाव होने के कारण आप भरत भाई में निशल्य हैं। ऐसे उन गोम्मटेश बाहुबली भगवान को मैं नित्य प्रणाम करता हूँ।

You are no supporter of greed of all hopes Because you are ruler of identical vision. Is annihilater of own all evils. So you are disinterested in the worldly pleasures. Who is free from stings with Bharata brother, owing to feel of apathy thought. Always I nod such that Lord Gommatesha Baahubalee.

Meaning = शब्दार्थ

Supporter = सपोर्टर = पुष्ट करने वाले, hopes = होप्स = आशा, ruler = रूलर = शासक, identical vision = आइडेन्टिकल विजन = समदृष्टि, annihilater = एनिहिलेटर = समूल नष्ट करने वाले, evils = ईवल्स = दोषों, pleasures = प्लीजियर्स = सुखों, free from stings = फ्री फ्रॉम स्टिंग्स = निशल्य, apathy thought = एपेथी थॉट = विरागभाव।

उपाहि मुत्तं धण-धाम-वज्जियं, सुसम्म जुत्तं मय मोह हारयं।
वस्सेय-पज्जंत मुववास जुत्तं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।8।।

Upaahi Muttam Dhanna Dhaama Vajjiyam, Susamma Juttam Maya Moha Haarayam.
Vasseya Pajjanta Muvavaasa Juttam, Tam Gommatesam Pannamaami Nichcham

काम-धाम से धन कंचन से, सकल संग से दूर हुए।
शूर हुए मद मोह मारकर, समता से भरपूर हुए।।
एक वर्ष तक एक थान थित, निराहार उपवास किये।
इसीलिए बस गोमटेश जिन, मम मन में अब वास किये।।8।।

Kaama Dhaama Se Dhana Kanchana Se, Sakala Sanga Se Doora Hue.
Shoora Hue Mada Moha Maarakara, Samataa Se Bharapoora Hue.
Eka Varsha Taka Eka Thaana Thita, Niraahaara Upavaasa Kiye.
Iseelie Basa Gomatesha Jina Mama Mana Men Aba Vaasa Kiye.

अर्थ :- जो उपाधि से रहित हैं। धन, मकानादि से रहित और समताभाव से सहित हैं, मद मोह को नष्ट करने वाले हैं, आपने एक स्थान पर खड़े होकर, एक वर्ष के उपवास किये थे। ऐसे उन गोम्मटेश बाहुबली भगवान को मैं नित्य प्रणाम करता हूँ।

Who is devoid from all ranks, is free from wealth and mansions, etc. and is endowed with equanimity thought, is destroyer of pride and illusion, You had observed fasts of one year, staying at a place. Always I nod such that lord Gommatesha Baahubalee.

Meaning = शब्दार्थ

Devoid = डिवॉइड = रहित, wealth = वेल्थ = धन, mansions = मेन्शन्स = मकान, endowed = एनडॉड = सहित, equanimity = इक्वेनिमिटी = समता, staying = स्टेइंग = स्थित होकर।

तीर्थंकर नेमिनाथ

Teerthankara Neminaatha

Child Nemikumar came in the womb of mother from Jayanta heaven on the sixth day of light half of the lunar month 'Kaartika' in the 'Uttaraashaadha' planet. His father's name was Samudravijay and mother was shivaadevee. He was born on the sixth day of light half of the lunar month shraavana in the Chitra planet, after five lakhs poorva of salvation of Teerthankara Naminaatha. The age of Teerthankara Neminath was one thousand years and height of body was ten bows (Dhanush).

Once a day the Nemikumar swung by his ring finger to Shrikrishna. Seeing strength of nemikumar, generated greed of kingdom in the mind of Shrikrishna. The Nemikumar shall take to my kingdom due to become strong, such filthy thinking, Shrikrishna disinclined from Nemikumar. After sometime Nemikumar went to frolics in the water on shore of river. After bathing, he told to Jaambavatee for squeezed his cloth, but she refused with moodly to this work, so he, angering, came in the arsenal of Shrikrishna and ascending on the Nagshaiya, blew sound of conch and stretched the string of 'Sharnga' bow. Hearing to its sound, Shrikrishna came there and bowed down in the feet of Nemikumar. He requested to Nemikumar for marry. Shrikrishna settled the marriage of Nemikumar with Rajamati. She was daughter of king Ugrasena and mother's name was Jayaavatee. When marriage of Nemikumar was performing, while Shrikrishna enclosed many animals in fence on purpose of feeling of aversion from worldly enjoyments awakened in Nemikumar in view of kingdom-eager-desire. As soon as the chariot of Nemikumar entered in the city, at that time he saw enclosed in the fence, at once he asked to defendres of his, that reason of confine for many animals. Those replied that who are eaters of meat, such uncivilised, (i.e.

mlechchha) kings came in the marriage celebration, so these animals are surrounded to make many items of meat for them. Hearing this fact, he moved by emotion and disallowed to marry with Rajamati. His mind disinclined from all worldly pleasures and he rethinking of twelve contemplations.

Meaning = शब्दार्थ

Swung = स्वंग = झुला दिया, ring finger = रिंग-फिंगर = कनिष्ठा, strength = स्ट्रेंग्थ = शक्ति, generated = जनरेटेड = उत्पन्न हुआ, greed = ग्रीड = लोभ, kingdom = किंगडम = राज्य, due to = ड्यू टू = के कारण, filthy = फिल्थी = बुरे, disinclined = डिसइनक्लाइन्ड = उदासीन हो गये, frolics = फ्रॉलिक्स = क्रीड़ा करने, shore = शोर = तट, squeezed = स्क्वीज्ड = निचोड़ने, cloth = क्लॉथ = कपड़े, refused = रिफ्यूज्ड = मना कर दिया, moodily = मोडलि = खिन्नता से, angering = एंगरिंग = क्रोधित होकर, arsenal = आरसिनल = आयुधशाला, ascending = एस्सेन्डिग = आरुढ़ होकर, blew sound = ब्लू साउन्ड = फूंक दिया, stretched = स्ट्रेच्ड = चढ़ा दिया, string = स्ट्रिंग = डोरी, bow = बाउ = धनुष, hearing = हियरिंग = सुनकर, bowed down = बाउड डाउन = नमस्कार किया, requested = रिक्वेस्टेड = प्रार्थना की, marry = मेरी = विवाह करने, settled = सेटल्ड = तय कर दिया, enclosed = एन्क्लोज्ड = बांधे गये, fence = फेन्स = बाड़े, on purpose = ऑन परपोज = उद्देश्य से, awakened = अवेकन्ड = उत्पन्न कराने, in view of = इन व्यू ऑफ = विचार से, eager desire = ईगर डिजायर = लोभ, chariot = चेरिअट = रथ, entered = एन्टर्ड = प्रवेश हुआ, at once = एट वन्स = तत्काल, defenders = डिफेन्डर्स = रक्षकों, confine = कन्फाइन = बांधने, replised = रिप्लाइड = उत्तर दिया, eaters = ईटर्स = खाने वाले, uncivilised = अनसिविलाइज्ड = म्लेच्छ, surrounded = सराउन्डेड = बांधे गये, fact = फेक्ट = बात (तथ्य), moved by emotion = मूव्ड बाइ इमोशन = द्रवीभूत हो गये, disallowed = डिस्एलॉउड = मना कर दिया, rethinking = रिथिंकिंग = चिन्तन करने लगे, contemplations = कन्टेमप्लेशन्स = भावनाओं।

Then at that very time Laukantika deities coming from Brahma heaven eulogized Teerthankara praising his detachment from worldly life and afterwards Nemikumar, himself sitting in the palanquin brought by the Kuber, went to forest of Girnar mountain. Having ensconced on the moon-stone rock kept there by celestial beings facing east and paying obeisance to liberated souls, pluking hair by the fist and renouncing attire and ornaments there by assumed the initiation of nude Jain-saint together thousand kings on the sixth day of light half of the lunar month 'Shravana' in the Sahasramra forest of Giranar

Siddhakshetra. When Muni Neminatha moved for taking food-intake after two fasts, then king Varadatta offered food first time to Muni Neminatha after nude-Jain saint inititaion with nine types of devotions (Navadha Bhakti) at Dvaraavatee city in the his palace. There after taking food Muni Neminatha went to forest. After fifty six days of non-omniscient-period, you achieved omniscience on the first day of light half of lunar month'Aashvin', under Bamboo tree on the Raivataka mountain. As soon as the omniscience manifested, the religious assembly (Samvasaran) was created by Kuber according to order of Saudharma Indra. There were 18000 Muni, 40000 Aryikayen, one Lakh male-householders and three lakh female householders in the religious assembly (Samavasaran) of Theerthankara Neminatha. Moving till six hundreds ninety nine years, ten months and four days delivered spiritual instructions for all potential souls on the many places. In the course of time, when one month remained in balance of his age, he leaving the Samavasaran, went to Girnar mountain. There he observed Yoga Nirodha, (i.e. ceased all activities of mind, speech and body) and attained the salvation together 536 saints on the eighth day of dark half lunar month 'Ashadha' at the 'Giranar' mountain. There were 11 Ganadhara of Teerthankara Neminatha. The Rajamati took the initiation of Aryika from Teerthankara Neminatha in the his Samavasaran. After that she observed the penance and attained to heavenly mode.

Meaning = शब्दार्थ

Eulogized = यूलॉइज्ड = स्तुति की, praising = प्रेजिंग = प्रशंसा करते हुये, detachment = डिटेचमेन्ट = विरक्ति, sitting = सिटिंग = बैठकर, palanquin = पेलन्कीन = पालकी, brought = ब्रॉट = लायी हुई, moon stone = मून स्टोन = चन्द्रकान्तमणि,rock = रॉक = शिला, kept = केप्ट = रखी हुई, facing = फेसिंग = मुख करके, east = ईस्ट = पूर्व, plucking = प्लकिंग = लोंच करना, fist = फिस्ट = मुट्ठी, attire = एट्टायर = वस्त्र, ornaments = ऑर्नेमेन्ट्स = आभूषण, assumed = एस्स्यूम्ड = धारण की, non-omniscient = नॉन-ऑम्निसिएन्ट = छद्मस्थ, achieved = एचीव्ड = प्राप्त हुआ, omniscience = ऑम्निसिएन्स = केवलज्ञान, manifested = मेनिफेस्टेड = प्रकट हुआ, created = क्रिएटेड =रचना हुई, delivered = डिलिवर्ड = उपदेश दिया, spiritual instructions = स्पिरिचुअल इन्सट्रक्शन्स= धार्मिक उपदेश, potential souls = पोटेंशिअल सॉल्स = भव्य जीवों, course of time = कोर्स ऑफ टाइम = कालान्तर, remained = रिमेन्ड = शेष रहने पर, leaving = लीविंग = छोड़कर, ceased = सीस्ड = रोक दी, penance = पेनन्स = तपस्या, heavenly = हेवनलि = स्वर्गीय, mode = मोड = पर्याय।

आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज

Aacharya Shree Shaantisaagarajee Mahaaraaja

Child Saatagauda was born in the night of wednesday, the 25th July, 1872, corresponding to 6the day of the dark fortnight of lunar month 'Aashar, vik.sam. 1929 in village Yelgul (Mahaaraashtra) near Bhojagram (Karnatak) in the house of his maternal grand father. The name of the mother of child Saatgauda was Satyavatee and his father's name was Bheemagauda Paatil. He was fourth Jain by caste. There were five brothers and sister including Saatagauda, Aadigaudaa, Devagaudaa, Saatagauda (Acharya Shree Shantisagarji), Kumbhagaudaa and Krishnaa Bai. He was a married celibate, i.e. he was married in the age of nine years to a girl of six years and it so happened that by chance that girl died after six months, he did not marry afterwards. He was interested in religious deeds from childhood, so he wanted to become a Muni at the age of 17-18 years but his father had great affection for him. The father told him that he should strive for religious accomplishment living in the house itself fill his life, after wards he might become 'Muni.' Therefore as per the wish (order) of his father he took initiation of Kshullak after his (of father) holy death (i.e. samadimaran) at the age of 43 years and become 'Muni at the age of 48 years. Saatagauda had feelings for the protection of living beings since childhood. There is an incident of one day Saatagauda had gone for defecation in the jungle. When he returned home with the broken metal round pot, he was asked about the breakage of the pot. He told that one snake was rushing towards a frog for sollowing that. So in order to save the life of the frog, he immediately threw the pot in question forcefully on the stone owing to which snake ran away. His sort of compassion and physical strength was very imcomparable. He lived in the house quite unattached. He was liked very much to animals and birds, so when he used to go on the field and birds cause damage to the crop, he did not cause them to flee, on the other hand he used to put water for them to drink.

Meaning = शब्दार्थ

Corresponding = कॉरेस्पॉन्डिंग = अनुरूप, maternal grand father = मेटर्नल ग्रान्ड फॉदर = नानाजी, caste = कास्ट = जाति, including = इनक्लूडिंग = सहित, married = मेरिड = विवाहित, celibate = सेलिबेट = ब्रह्मचारी, happened = हेपिन्ड = घटित हुआ, by chance = बाई चान्स = देवयोग से, died = डाइड = मर गई, interested = इन्टरेस्टेड = रूचि रखते, wanted = वॉन्टेड = चाहते थे, affection = अफेक्शन = अनुराग, strive = स्ट्राइव = उद्यम (साधना) करो, as per the wish = एज पर द विश = आज्ञा के कारण, feelings = फीलिंग्स = भाव, protection = प्रोटेक्शन = रक्षा, incident = इन्सिडेन्ट = घटना, defecation = डिफेक्शन = शौच क्रिया, broken = ब्रोकन = टूटा हुआ, metal round pot = मेटल राउन्ड पॉट = लोटा, breakage = ब्रेकएज = टूट गया, rushing = रशिंग = झपट रहा, , frog = फ्रॉग = मेंढक, swallowing = स्वॉलोइंग = निगलने, in order to = इन ऑर्डर टू = के उद्देश्य से, save = सेव = बचाने, immeditately = इम्मिडियटली = तुरंत, threw = थ्रू = पटक दिया, question = क्वेश्चन = आपत्ति, forcefully = फोर्सफुली = जोर से, owing to = ओइंग टू = के कारण, ran away = रन अवे = भाग गया, sort = सोर्ट = ढँग, compassion = कम्पेशन = करुणा, physical = फिजिकल = शारीरिक, strength = स्ट्रेंग्थ = शक्ति, incomparable = इनकम्परेबल = अद्वितीय, quite = क्वाइट = बिल्कुल, unattached = अनअटेच्ड = अनासक्त, liked = लाइक्ड = प्रेम करते, damage = डेमेज = हानि, crop = क्रॉप = फसल flee = फ्ली = भगाते, put = पुट = रखते।

He accepted the initiation of Kshullaka from Devendrakeerti Muniraj on the 13th day of light of 'Jetha month' Vikrama Sam. 1972 (Christion era 1915) at village 'Uttoora'. The Ailak initiation accepted self at Siddhakshetra Girinarji on the fourteenth day of the light half of the lunar month 'Pausha'. Vik. Sam. 1975 (Christian era wednesday January 1919). You took mani-initiation from Muni Devendrakeertiji on the 13th day of the light half of the lunar month Falguna, Vikram Samvat 1976 (Christian era Tuesday 2nd March 1920) at Yarnal on the occasion of 'Panch Kalyanak' and according to Muni Shri Vardhamansagar ji (elder brother of Acharya Shantisagarji), Acharya Shri Shantisagarji took initiation of Muni from Bhonsekar Aadisagarji Maharaj at Yaranaal. Granded the position of Acharya on Wednesday, the 1th day of the light half of the lunar month Ashvina, Vikram Sam. 1981, corresponding to Christian era 1924 at Samadolee.' The status of Charitra Chakravarti to you on Vikram Samvat 1924. (Christian era 1937) at Gajapanthaa SiddhaKshetra. He observed fasts for 27 years 2 months and 23 days, i.e. 9938 fasts during 35 years of his Muni life. Status of Acharya was abondoned through a letter at Kunthalgiri Siddhakshetra. He

transferred his status of Acharya to muni Shri Veerasagarji on the 9th day of the light half of the lunar month of first 'Bhadra', Vikram Samvat 2012 Corresponding to 18th September, 1955. Sallekhana (Process of holy death) was accomplished at Kunthalagiri on Sunday, 2nd day of the light half of the lunar month of Second 'Bhadra', Vikram Samvat 2012. Corresponding to 18th September, 1955 Many acclaim of Such Acharya Shri Shantisagarji Maharaj. Who was reviver to the culture of naked Jaina Saints in the twentieth century. You are victor of calamity and prime ascetic having special virtue in austerity.

Meaning = शब्दार्थ

Occasion = ऑकेजन = अवसर, granded = ग्रान्डेड = दिया, fasts = फास्ट्स = उपवास, abandoned = एवॉन्डन्ड = त्याग किया, transferred = ट्रान्सफर्ड = अधिकार दिया, process = प्रोसेस = क्रम, continued = कन्टिन्यूड = जारी रहा, accomplished = एकॉमप्लिशड = सम्पन्न हुई, acclaim = एक्क्लेम = जय होवें , reviver = रिवाइवर = पुनर्जीवित करने वाले, culture = कल्चर = संस्कृति, twentieth = ट्वन्टिथ = बीसवीं, century = सेन्चुरी = शताब्दी, victor = विक्टर = विजेता, calamity = क्लेमिटि = उपसर्ग, prime ascetic = प्राइम एस्सेटिक = प्रथम गुरु, special = स्पेशल = विशेष, austerity = ऑस्टेरिटि = तपस्या।

अक्षय तृतीया पर्व

Festival of Akshaya Triteeyaa

After taking initiation of Muni, performs arduous penance by keeping mum. The first Teerthankara Adinatha observed fast for six months. When he moved for taking food, then not any householder knew nine types of devotions related to offering food to Jain saints. Therefore, again he had to observed fast for seven months nine days. While moving, one day he reached Hastinapur. As soon as the king Shreyansa had a glance at Adinatha the recollection of the memory of his past birth strucked his mind that he had offered food to a Muniraj endowed with the supernatural power of moving in the sky in the past eighth birth, with nine types of devotions and only due to lack of this nine types of devotions, Muniraj Adinatha is not getting food. Then what matter. When Muni Adinatha moved for taking food then king Somaprabha and king Shreyansa offered food of Sugercan juice first time to the first Teerthankar after so many fasts (with nine types of devotions) on the third day of the night half of the lunar month 'Vaishakh'. The five spiritual and super wonders manifested through efficacy power of taking food of Teerthankara in the palace of King Shreyansa, are as follows - 1. Shower of divine jewels, 2. Shower of divine flowers from sky, 3. Divine sound of kettledrum etc. 4.Blowing of slow fragrant cold wind. 5. The sound of devotional 'Aho Danam', Aho Danam' in the space. That day the food became never ending at this place of King Shreyansa, therefore this is called Akshya Triteeya festival. From then only the festival of Akshaya Triteeya is in vogue. This merry-making is very holy such esteems in the all Hindu-religion. This festival is began from time of Teerthankar Adinatha, so this is very ancient.

Meaning = शब्दार्थ

Arduous = आर्डयुअस = कठिन, mum = मम = मौन, sugarcane = सुगरकेन = इक्षु (गन्ना), juice = ज्यूस = रस, super wonders = सुपर वन्डर्स = आश्चर्य, manifested = मेनिफेस्टेड = प्रकट हुये, efficacy power = एफिससि पॉवर = प्रभावकारिता शक्ति, as follows = एज फॉलोज = इस प्रकार, divine = डिवाइन = पवित्र, jewels= ज्वेल्स = रत्न, shower = शॉवर = वर्षा होना, kettledrum = केटलड्रम = भेरी, नगाड़ा, blowing = ब्लोइंग = बहना, slow = स्लो = मंद-मंद, fragrant = फ्रेग्रेन्ट = सुगन्धित होना, cold wind = कोल्ड विन्ड = शीतल पवन, devotional = डिवोशनल = भक्तिपूर्वक, space = स्पेस = आकाश, never ending = नेवर एन्डिंग = अक्षीण, at this place= एट दिस प्लेस = यहाँ पर, therefore = देअरफोर = अतः, from then only = फ्रॉम देन ओनलि = तभी से, in vougue = इन वोग्यू = प्रचलित, merry making = मेरि-मेकिंग = त्यौहार, holy = होलि = पवित्र, esteems = एस्टीम्स = माना जाता, ancient = एनसाइन्ट = प्राचीन ।

श्री गिरनार सिद्ध क्षेत्र

Shree Giranaara Siddhakshetra

The auspicious events of initiation, omniscience and salvation of Teerthankara Shri Neminaathaji took place here and 72 crore 700 muni attained salvation from this very Kshetra. Here there are five hills in total. The Rajula cave is in the first hill, Foot prints of Aniruddha Kumar are on the second, The Foot-prints of Shamboo Kumar are on the third, Foot-Prints of Pradyumna Kumar are on the fourth. The Foot-Prints of Teerthankara Neminathji exist on the fifth hill. On the back side of the foot-print, there is a magnificent Digambar idol of Teertankara Shri Neminathaji. Guruvara Acharyashri Vidyasagarji had granted five Ailaka Initiations on this hill.

Meaning = शब्दार्थ

Auspicious events = ऑस्पिशस ईवेन्टस = कल्याणक, omniscience = ऑम्निसिएन्स = केवलज्ञान, cave = केव = गुफा, foot prints = फुट प्रिन्ट्स = चरण चिन्ह, back = बेक = पीछे, magnificent = मेगनिफिसेन्ट = शोभायमान, idol = आइडल = मूर्ति, granted = ग्रान्टेड = प्रदान की।

कविता (Poem)

महान् गुरुवर (Super Preceptor)

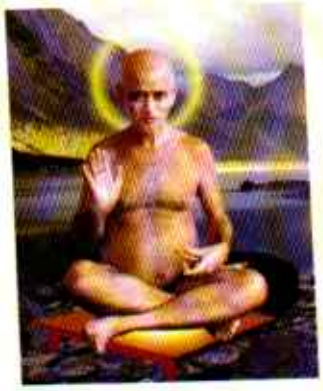

Preceptor, Preceptor, you are major.
I am gleam, you are glitter.
I am step, you are tower.
I am vassel, You are protector.
I am sinner, you are tender.
Preceptor, Preceptor...
I am boat, you are sailor.
I am ignorant, you are dictator.
I am foolish, you are scholar.
I am vessel, you are initiator.
Preceptor...
I am chapter, you are editor.
I am outline, you are projector.
I am word, you are printer.
I am refugee, you are harbour.
Preceptor, Preceptor...

Meaning = शब्दार्थ

Preceptor = प्रीसेप्टर = गुरुवर, major = मेजर = सर्वोच्च, gleam = ग्लीम = किरण, glitter = ग्लिटर= प्रकाशपुंज, step = स्टेप = सीढ़ी, tower = टॉवर = मंजिल, vassel = वेसल = दास, protector = प्रॉटेक्टर = उद्धारक, sinner = सिनर = पापी, tender = टेंडर = दयालु, boat = बोट = नाव, sailor = सेलर = माँझी, ignorant = इग्नोरेंट = अज्ञानी, dictator = डिक्टेटर = अधिनायक, foolish = फूलिश = बुद्धिहीन, scholar = स्कॉलर= विद्वान, vessel = वेसिल = पात्र, initiator = इनीशिएटर = संस्कार करने वाले, chapter = चेप्टर = अध्याय, editor = एडीटर = सम्पादक, outline = आउट लाइन = सीमा रेखा, projector = प्रोजेक्टर = योजना बनाने वाले, printer = प्रिंटर = मुद्रक, refugee = रेफ्यूजी = शरणार्थी, harbour = हॉरबर = शरणालय।

Live-View

Name	:	ARYIKA VINATMATI MATA JI
Previous Name	:	Br. Usha Ji
Father's Name	:	Lt. Shri Jainendra Kumar Ji Jain
Mother's Name	:	Lt. Smt. Kamlabai Jain
Birth Place	:	Shivpuri (M.P.)
Date of Birth	:	19-07-1963
Education	:	M.A. (English)
Brahmacharya Vrit	:	1987 (Thoobounaji)
Aryika Deeksha	:	25-01-1993 (Jabalpur, M.P.)
Deeksha-Guru	:	P.P. Acharya Shri Vidyasagarji Maharaj
Sanghasth	:	P. Aryika Shree Prasantmati Mataji

Literatures English Translations

Shri Shantinath Stuti, Jinsahasranaamastrota

See and Know, 1,2,3 Part, Read and Rise-1,2,3,4

Ten Devotions,

Learn and Laugh (General Knowledge Book)

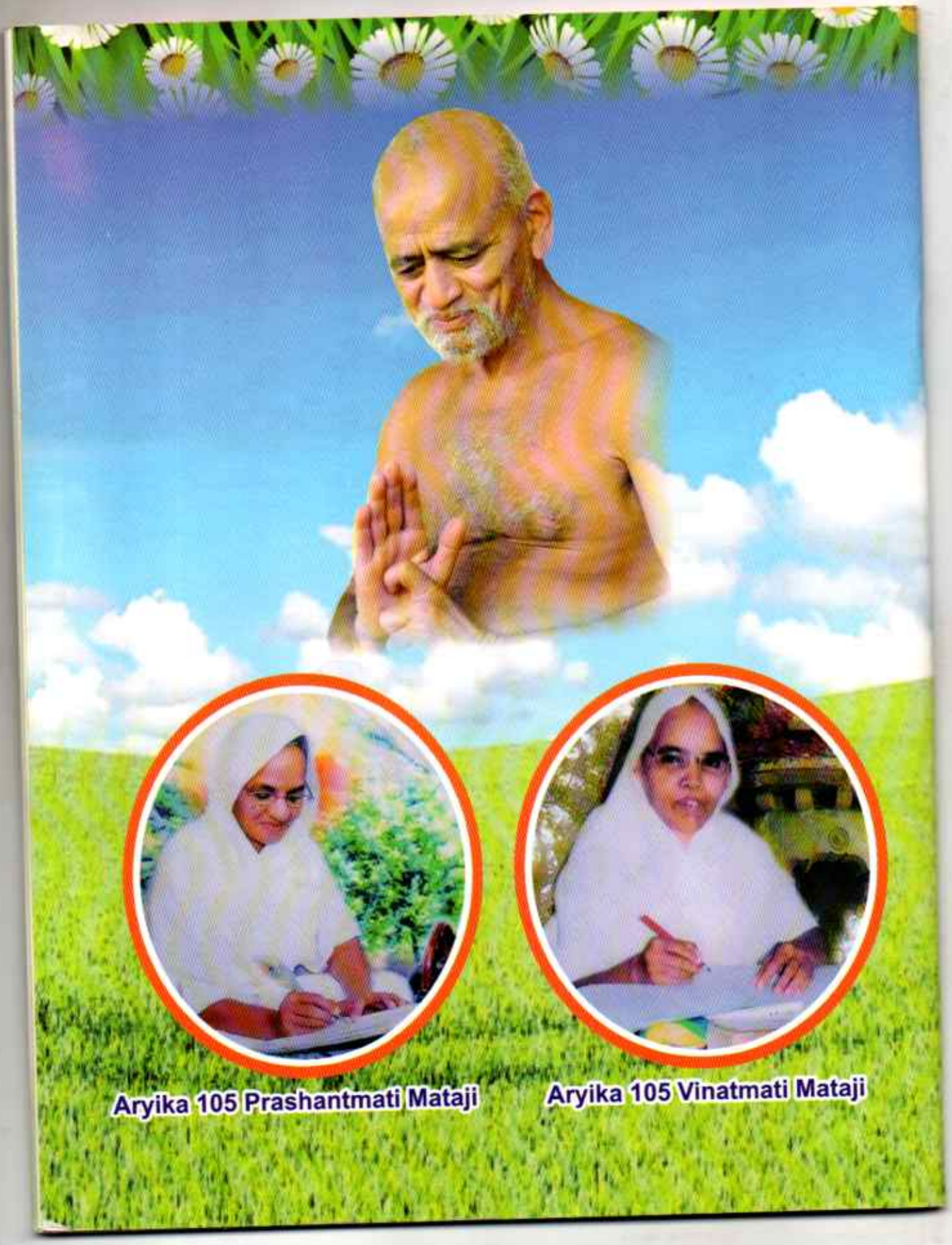

Aryika 105 Prashantmati Mataji

Aryika 105 Vinatmati Mataji